Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ
اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ
مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا

(बनी इसराईल : 40)

अनुवाद : और अल्लाह के साथ किसी और के लिए उपास्य मत बनाओं, अन्यथा तुम्हें नरक में डाल दिया जाएगा, तिरस्कृत(और)अपमानित किया जायेगा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-28

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

24 ज़ुल्- हज्जा 1444 हिज्री कमरी, 13 वफ़ा 1402 हिज्री शम्सी, 13 जुलाई 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

(आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात) हमारी ज़िंदगी का केन्द्रीय बिन्दु है और इसके बग़ैर हमारा दीन, हमारा ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता और अल्लाह तआला की भेजी हुई शरीयत पर अमल भी नहीं हो सकता

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी के परिप्रेक्ष्य में जंग बदर की पृष्ठभूमि का वर्णन

श्रीमान ख़्वाजा मुनीरुद्दीन क़मर साहिब आफ़ यू.के का जनाज़ा हाज़िर, तथा श्रीमान साहिबज़ादा डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहिब वाकिफ-ए-ज़िंदगी फ़ज़ल-ए-उमर हस्पताल रब्वाह, श्रीमती सय्यदा अंतुल बसित साहिबा आफ़ इस्लामाबाद पाकिस्तान और श्रीमान शरीफ़ अहमद बंदीशिया साहिब सदर जमाअत चक नम्बर 261 र-ब अधोवाली ज़िला फैसलाबाद की वफ़ात पर मरहूमीन का वर्णन और नमाज़-ए--जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 जून 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

बदरी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत के पहलू और उनका परिचय और उनकी क़ुर्बानियां में एक सिलसिला ख़ुत्बात में वर्णन करता रहा हूँ। बहुत से लोगों ने इस ख़ाहिश का इज़हार किया और मुझे लिखा कि अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत न वर्णन की जाए तो कमी रह जाएगी क्योंकि असल केन्द्रीय बिन्दु तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात थी जिसके गर्द सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो घूमते थे। जिसके साथ जुड़ कर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ुर्बानियां करने के बेमिसाल मयार हासिल किए और नए नए उस्लूब सीखे और तौहीद को फैलाने और ख़ुद उस का अमली उदाहरण बनने के वह मयार क़ायम किए जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुदसी और अल्लाह तआला के ख़ास महबूब होने का सबूत है। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत का वर्णन भी ज़रूरी है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के विभिन्न पहलूओं पर विभिन्न वक़्तों में पिछले सालों में ख़ुत्बात दिए भी गए हैं लेकिन बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत ऐसी है कि इस के वर्णन को सीमित नहीं किया जा सकता। एक एक वस्फ़ ऐसा है कि जिसका अहाता कई ख़ुत्बात में भी नहीं किया जा सकता और यह सीरत तो इन शा अल्लाह समय समय पर वर्णन होती भी रहेगी बल्कि हर ख़ुतबा और ख़िताब में कोई न कोई पहलू किसी न किसी रंग में वर्णन होता भी रहता है क्योंकि यही हमारी ज़िंदगी का केन्द्रीय बिन्दु है और इसके बग़ैर हमारा दीन, हमारा ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता और अल्लाह तआला की भेजी हुई शरीयत पर अमल भी नहीं हो सकता।

बहरहाल इस वक़्त में जंग-ए-बदर के हवाले से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के पहलू और तारीख़ की घटनाओं का वर्णन करूँगा और यह सिलसिला आगे कुछ ख़ुत्बात में भी चलेगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा ही है जिसने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को बेलौस क़ुर्बानियों का जज़बा अता फ़रमाया और यह जज़बा अता फ़र्मा कर ग़ाज़ियों और शहीदों और अल्लाह तआला के प्यारों और अल्लाह तआला के उनसे राज़ी रहने वालों में शामिल फ़रमाया और जिसके नमूने हमने अपनी ज़िंदगीयों में देखे। अतः इस जंग के हवाले से भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा का वर्णन है।

जंग की घटनाओं से पहले उन कारणों का वर्णन करना भी ज़रूरी है जिस वजह से जंग हुई। इसलिए पहले मैं इस की कुछ पृष्ठभूमि वर्णन करूँगा। इस पृष्ठभूमि में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की लाई हुई ख़ूबसूरत तालीम के विभिन्न पहलू ज़ाहिर हो रहे हैं।

जंग-ए-बदर के अस्बाब वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्की ज़िंदगी में जो जो मज़ालिम क़ुरैश ने मुस्लमानों पर किए और जो जो तदाबीर इस्लाम को मिटाने की उन्होंने इख़तेयार कीं वह हर ज़माना में हर किस्म के हालात के अधीन किसी दो क़ौमों में जंग छिड़ जाने का काफ़ी बायस हैं। तारीख़ से साबित है कि सख़्त तहक़ीर आमेज़ उपहास और निहायत दिलाज़ार तान-ओ-तशनी के इलावा कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ने मुस्लमानों

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

को ख़ुदाए वाहिद की इबादत और तौहीद के ऐलान से जबरन रोका। उनको निहायत बेदर्दाना तौर पर मारा और पीटा। उनके अम्वाल को नाजायज़ तौर पर ग़सब किया। उनका बाईकॉट करके उनको हलाक व बर्बाद करने का प्रयास किया। उनमें से कुछ को ज़ालिमाना तौर पर क़तल किया। उनकी औरतों की बे-हुरमती की। यहा तक कि इन मज़ालिम से तंग आकर बहुत से मुस्लमान मक्का को छोड़कर हब्शा की तरफ़ हिज्रत कर गए लेकिन क़ुरैश ने इस पर भी सब्र न किया और नजाशी के दरबार में अपना एक दल भेज कर यह प्रयास किया कि किसी तरह यह मुहाजेरीन फिर मक्का में वापस आ जाएं और क़ुरैश उन्हें इस्लाम से मुनहरिफ़ करने में कामयाब हो जाएं और या उनका ख़ातमा कर दिया जाए। फिर मुस्लमानों के आक़ा और सरदार को जिसे वह अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ समझते थे सख़्त तकालीफ़ पहुंचाई गईं और हर किस्म के दुखों में मुबतला किया गया और क़ुरैश के भाई बंदों ने तायफ में ख़ुदा का नाम लेने पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर पत्थर बरसा दीए यह तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बदन ख़ून से तरबतर हो गया और अंततः मक्का की क़ौमी पार्लीमैंट में सारे क़बायल-ए-क़ुरैश के नुमाइंदों के इत्तफ़ाक़ से यह फ़ैसला किया गया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़त्ल कर दिया जाए ताकि इस्लाम का नामोनिशान मिट जाए और तौहीद का हमेशा के लिए ख़ातमा हो और फिर उस ख़ूनी क़रारदाद को अमली जामा पहनाने के लिए नौ जवानान-ए-मक्का जौ विभिन्न क़बायल क़ुरैश से ताल्लुक़ रखते थे रात के वक़्त एक जत्था बना कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मकान पर हमला-आवर हुए लेकिन ख़ुदा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त फ़रमाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी आँखों पर ख़ाक डालते हुए अपने मकान से निकल आए और ग़ार-ए-सौर में पनाह ली। क्या ये मज़ालिम और यह ख़ूनी क़रार-दादें क़ुरैश की तरफ़ से जंग का ऐलान का हुक्म नहीं रखतीं? क्या इन दृश्यों के होते हुए कोई अक़लमंद यह ख़्याल कर सकता है कि क़ुरैश मक्का इस्लाम और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ बरसर-ए-पैकार न थे? फिर क्या क़ुरैश के ये मज़ालिम मुस्लमानों की तरफ़ से दिफ़ाई जंग की काफ़ी बुनियाद नहीं हो सकते थे? क्या दुनिया में कोई बाग़ैरत क़ौम जो ख़ुदकुशी का इरादा न कर चुकी हो इन हालात के होते हुए इस किस्म के अल्टीमेटम के क़बूल करने से पीछे रह सकती है जो क़ुरैश ने मुस्लमानों को दिया? यक़ीनन यक़ीनन अगर मुस्लमानों की जगह कोई और क़ौम होती तो वह इस से बहुत पहले क़ुरैश के ख़िलाफ़ मैदान-ए-जंग में उतर आती परंतु मुस्लमानों को उनके आक़ा की तरफ़ से सब्र और माफ करने का हुक्म था। इसलिए लिखा है कि जब मक्का में क़ुरैश के मज़ालिम बहुत बढ़ गए तो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर क़ुरैश के मुक़ाबला की इजाज़त चाही परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया اِنِّیۡ اُمِرۡتُ بِالۡعَفۡوِ فَلَا تُقَاتِلُوۡا अर्थात मुझे अभी तक क्षमा का हुक्म है इस लिए मैं तुम्हें लड़ने की इजाज़त नहीं दे सकता। इसलिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने दीन की राह में हर किस्म की तकलीफ़ और ज़िल्लत बर्दाश्त की परंतु सब्र के दामन को नह छोड़ा यहाँ तक कि क़ुरैश के मज़ालिम का पियाला भर कर छलकने लग गया और ख़ुदावंद आलम की नज़र में समझने का अंतिम प्रयास पूर्ण होने की सीमा पूरी हो गई। तब ख़ुदा ने अपने बंदे को हुक्म दिया कि तू इस बस्ती से निकल जा अब मुआमला अफ़व की हद से गुज़र चुका है और वक़्त आ गया है कि ज़ालिम अपने कैफ़र-ए-किर्दार को पहुंचे। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह हिज्रत क़ुरैश के अल्टीमेटम के क़बूल किए जाने की अलामत थी और इस में ख़ुदा की तरफ़ से जंग का ऐलान एक मख़फ़ी इशारा था जिसे मुस्लमान और कुफ़्फ़ार दोनों समझते थे इसलिए दारुल नुद्वा" वह जो ख़ाना काअबा के क़रीब क़ुरैश के मश्वरा की जगह थी" के मश्वरा के वक़्त जब किसी शख़्स ने यह तजवीज़ पेश की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाल दिया जावे तो क़ुरैश के सरदार ने इस तजवीज़ को इसी बिना पर रद्द कर दिया था कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मक्का से निकल गया तो फिर ज़रूर मुस्लमान हमारे अल्टीमेटम को क़बूल करके हमारे ख़िलाफ़ मैदान में निकल आएँगे और मदीना के अंसार के सामने भी जब बैअत उक़बा सानिया के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिज्रत का सवाल आया तो उन्होंने फ़ौरन कहा कि इस के ये अर्थ हैं कि हमें समस्त अरब के ख़िलाफ़ जंग के लिए तैयार हो जाना चाहिए और ख़ुद आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम जब मक्का से निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का के दरोदीवार पर हसरत भरी निगाहें डाल कर फ़रमाया कि हे मक्का तू मुझे सारी बस्तियों से ज़्यादा अज़ीज़ था परंतु तेरे बाशिंदे मुझे यहां रहने नहीं देते तो इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी यही कहा कि उन्होंने ख़ुदा के रसूल को उस के वतन से निकाला है अब ये लोग ज़रूर हलाक होंगे।

ख़ुलासा कलाम यह कि जब तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में रहते रहे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर किस्म के मज़ालिम बर्दाश्त किए लेकिन क़ुरैश के ख़िलाफ़ तलवार नहीं उठाई क्योंकि अव्वल तो पेशतर इसके कि क़ुरैश के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई की जाती सुन्नतउल्लाह के मुताबिक़ उन पर अत्माम--ए-हुज्जत ज़रूरी था और इसके लिए मोहलत दरकार थी। दूसरे ख़ुदा का यह भी मंशा था कि मुस्लमान इस आख़िरी हद तक अफ़व और सब्र का नमूना दिखलाएँ कि जिसके बाद ख़ामोश रहना ख़ुदकुशी के समान हो जावे जो किसी अक़लमंद के नज़दीक मुस्तहसिन फ़ेअल नहीं समझा जा सकता। तीसरे मक्का में क़ुरैश की एक किस्म की जमहूरी हुकूमत क़ायम थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके शहरियों में से एक शहरी थे। अतः हुस्न-ए-सियासत का तक़ाज़ा था कि जब तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का में रहें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस हकूमत का एहतेराम फ़रमाएं और ख़ुद कोई अमन शिकन बात न होने दें और जब मुआमला क्षमा करने की हद से गुज़र जावे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हिज्रत कर जाएं। चौथे यह भी ज़रूरी था कि जब तक ख़ुदा की नज़र में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ौम अपनी कार्यवाईयों की वजह से अज़ाब की मुस्तहिक़ न हो जाए और उन को हलाक करने का वक़्त न आ जाए आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्ही में मुक़ीम रहें और जब वह वक़्त आ जाए तो आप वहां से हिज्रत फ़र्मा जाएं क्योंकि सुन्नतुल्लाह के मुताबिक़ नबी जब तक अपनी क़ौम में मौजूद हो उन पर हलाक कर देने वाला अज़ाब नहीं आता और जब हलाकत का अज़ाब आने वाला हो तो नबी को वहां से चले जाने का हुक्म होता है। इन वजूहात से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिज्रत अपने अंदर ख़ास इशारात रखती थी परंतु अफ़सोस कि ज़ालिम क़ौम ने न पहचाना और ज़ुलम व झड़ों में बढ़ती गई अन्यथा यदि अब भी क़ुरैश बाज़ आ जाते और दीन के मुआमला में जबर से काम लेना छोड़ देते और मुस्लमानों को अमन की ज़िंदगी बसर करने देते तो ख़ुदा अत् याधिकक्षमा करने वाला है और उसका रसूल भी समस्त संसार के लिए रहमत था निसन्देह अब भी उन्हें माफ़ कर दिया जाता और अरब को वो कुशत-ओ-ख़ून के नज़्ज़ारे न देखने पड़ते जो उस ने देखे परंतु तक़दीर के नविश्ते पूरे होने थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिज्रत ने क़ुरैश की अदावत की आग पर तेल का काम दिया और वह आगे से भी ज़्यादा जोशोख़रोश के साथ इस्लाम को मिटाने के लिए उठ खड़े हुए।

इन ग़रीब और कमज़ोर मुस्लमानों पर ज़ुल्मो सितम ढाने के इलावा जो अभी तक मक्का में ही थे सबसे पहला काम जो क़ुरैश ने किया वह यह था कि जूंही कि उनको यह इलम हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से बच कर निकल गए हैं वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछा करने में निकल खड़े हुए और वादी बक्का की चप्पा चप्पा ज़मीन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश में छान मारी और ख़ास ग़ार-ए-सौर के मुँह तक भी जा पहुंचे परंतु अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुसरत फ़रमाई और क़ुरैश की आँखों पर ऐसा पर्दा डाल दिया कि वह ठीक मंज़िल-ए-मक़सूद तक पहुंच कर ख़ायब व ख़ासिर वापस लौट गए। जब वह इस तलाश में मायूस हुए तो उन्हों ने आम ऐलान किया कि जो शख़्स भी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को ज़िंदा या मुर्दा पकड़ कर लाएगा उसे एक सौ ऊंट जो आजकल की क़ीमत के हिसाब से करीबा बीस हज़ार रुपया बनता है इनाम दिया जाएगा।" उस ज़माने में जब हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा यह 1931 ई. की बात है। आजकल तो यह करोड़ों की बात है। इस को एक सौ ऊंट दिए जाऐंगे। करोड़ों के इनाम का लालच था।" और इस इनाम के लालच में विभिन्न क़बायल के बीसियों नौजवान आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश में चारों तरफ़ निकल खड़े हुए। इसलिए सुराक़ा बिन मालिक का पीछा इसी इनामी ऐलान का नतीजा था परंतु इस तदबीर में भी क़ुरैश को नाकामी का मुँह देखना पड़ा। ग़ौर किया जाए तो दो क़ौमों में जंग छिड़ जाने के लिए केवल यही एक वजह काफ़ी है कि किसी क़ौम के आक़ा और सरदार के मुताल्लिक़ दूसरी क़ौम इस तरह का इनाम पुनः निर्धारित करे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 298 से 300)

इसी तरह जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से मदीना हिज्रत कर के चले आए तो क़ुरैश ने मदीना के रईस अब्दुल्लाह बिन अबी और उसके साथियों

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

कुफ़्फ़ार-ए-मक्का मुस्लमानों से बाक़ायदा जंग का बहाना तलाश कर रहे थे, अन्यथ यदि केवल क़ाफ़िले को बचाना उद्देश्य होता तो यह ख़बर जिस तरह दी गई थी

फ़ौरी तौर पर पहुंच जाते, जिसके हाथ में जो हथियार आता, ले के चला जाता लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि वह क़ाफ़िले की बजाय जंग के लिए तैयारी की गई

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी के परिप्रेक्ष्य में जंग बदर की पृष्ठभूमि का वर्णन

ग़ज़व-ए-बदर से पूर्व होने वाले कुछ ग़ज़वात-ओ-सराया का वर्णन

सरिया उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो में हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लामी तारीख़ का पहला तीर चलाया जिस पर उन्हें बजा तौर पर गर्व था

सफ़र दो हिज्री में ग़ज़वा वद्दान पहला ग़ज़वा था जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साठ सत्तर मुहाजेरीन के साथस्व यं शरीक हुए

अल्लाह तआला ने हुर्मत वाले महीने रजब में सरिया अब्दुल्लाह जह्श रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए सूरत बकरः की आयत 218 बतौर वह्यी मुस्लमानों की तसल्ली के लिए नाज़िल की

जंग-ए-बदर के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी आतका बिंत-ए-अब्दुल मुतलिब का एक अजीब ख़ाब जो बाद में साबित हुआ

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 जून 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

हिज्रत के बाद के इबतेदाई हालात, जंग बदर के अस्बाब और कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की कार्यवाईयों के ख़िलाफ़ अमल और उनके बद मन्सूबों को रोकने के लिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कार्रवाई फ़रमाई उसका कुछ वर्णन हुआ था। अब जंग-ए-बदर से क़बल कुछ सराया और ग़ज़वात भी हुए उनका मुख़्तसेरन वर्णन पहले करूँगा। फिर कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की जंग के लिए तैयारी के कुछ हालात भी वर्णन करूँगा। इन शा अल्लाह।

सिरयः हज़रत हम्ज़ा। यह पहला सरया था जो रमज़ान एक हिज्री में हुआ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो भेजा। उसे सरयः सैफ अल्-बहर कहते हैं। इस का झंडा सफ़ैद था और इस के अल् मबरदार अबू मुर्सिद ग़ुंवी रज़ियल्लाहु अन्हो थे। यह सरिया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रमज़ान सन एक हिज्री में भेजा और अपने चचा हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुतलिब को इस का अमीर बनाया। उनके साथ तीस मुहाजिर सवार थे। ये लोग ईसा के अतराफ़ में बहीरा अहमर के साहिल तक गए और क़ुरैश का एक काफिल जो अबुजहल की सरकर्दगी में शाम से आ रहा था उस से सामना हुआ। ईस राबिग़ के उत्तर में तक़रीबन तीस किलो मीटर के फ़ासले पर एक जगह है जो सानीयतुल अहमर के नवाह में है और मदीना मुनव्वरा से राबिग़ का फ़सला तक़रीबन दो सौ चालीस किलो मीटर है। यहां ज़ुनाबतुल ईस नामी एक चशमा था जिसके इर्द-गिर्द कीकर इत्यादि के दरख़्तों की कसरत थी इस वजह से उसे ईस कहा जाता है। यहां बनूसुलेम आबाद थे। शाम जाने वाले क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले इधर से गुज़रते थे। बहरहाल दोनों फ़रीक़ आमने सामने हो गए। आमना सामना हो गया और क़रीब था कि जंग हो जाती लेकिन क़बीले के एक रईस ने बीच बचाओ करवा दिया और दोनों फ़रीक़ वापिस गए।

(एटलस सीरत नब्वी, पृष्ठ 193 - 194, प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424)

फिर सिरयः उबैदा बिन हारिस है। शवाल सन् एक हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो को साठ मुहाजेरीन की कमान देकर राबिग़ के क़रीब बसानीयः तुलमरह की तरफ़ रवाना किया। वहां अबूसुफ़ियान और इस के दो सौ सवारों से उनका आमना सामना हुआ। दोनों तरफ़ से चंद तीर चलाए गए परंतु बाक़ायदा लड़ाई नहीं हुई। हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस दिन सबसे पहले तीर चलाया। इस से पहले कभी मुस्लमानों और मुशरेकीन के दरमयान तीर-अंदाज़ी भी नहीं हुई थी। गोया यह इस्लामी तारीख़ का पहला तीर था जिस पर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को बजा तौर पर गर्व था। फिर फ़रीक़ैन वापस अपने अपने इलाक़े में चले गए। सनीयतुल्मरह् राबिग़ शहर के उत्तर पूर्व में तक़रीबन पचपन किलोमीटर के फ़ासले पर है और मदीना मुनव्वरा से इस का फ़ासिला दो सौ किलो मीटर है।

(एटलस सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 196 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 ह)

फिर सरिया हज़रत साद बिन अबी वक्कास है। सन एक हिज्री और कुछ के कथन अनुसार सन् दो हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो को बीस आदमियों का अमीर बना कर रवाना किया और हुक्म दिया कि वह ख़र्रार वादी से आगे न जाएं। वे पैदल चलते गए। दिन को छिपे रहते और रात को सफ़र करते। यहां तक कि वे ख़र्रार तक पहुंच गए। उनका उद्देश्य क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले को रोकना था लेकिन जब ये दस्ता ख़र्रार पहुंचा तो उन्हें पता चला कि क़ाफ़ला कल यहां से गुज़र गया है इसलिए वह बग़ैर किसी लड़ाई के वापस आ गए। ख़र्रार के बारे में लिखा है कि इस के मअनी हैं आवाज़ के साथ बहने वाला पानी और ख़र्रार हिजाज़ के इलाक़े में जुह के नज़दीक एक जगह का नाम है।

(एटलस सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 199 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 ह)

फिर ग़ज़व-ए-वद्दान या ग़ज़व-ए-अब्वा दो हिज्री का है। सफ़र सन् दो हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साठ सत्तर मुहाजेरीन के साथ अब्वा या वद्दान की तरफ़ गए। इतिहासकार इब्ने साद के नज़दीक यह पहला ग़ज़वा है जिस में

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं शरीक हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद बिन उबादः रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीने में अपना नायब मुक़र्रर फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अब्वा के मुक़ाम तक पहुंचे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरादा क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले को रोकना था लेकिन वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वहां पहुंचने से पहले ही निकल चुका था। यहां आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू ज़मरः के सरदार मख़शी बिन अमर ज़मीरी के साथ सुलह का मुआहिदा किया। मुआहिदा यह हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बनू ज़मर पर हमला नहीं करेंगे और न बनू ज़मुर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई करेंगे न किसी कार्रवाई में हिस्सा लेंगे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के किसी दुश्मन की मदद भी नहीं करेंगे। इस सफ़र में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना से पंद्रह दिन बाहर रहे। वद्दान के बारे में लिखा है कि मक्का और मदीना के दरमयान जगह है। अब तेराह किलो मीटर के फ़ासले पर वाक़्य है जहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा मदफ़ून हैं। जुहफ़ा से इस का फ़ासिला तक़रीबन सौ किलो मीटर है।

(एटलस सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 202 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 ह)

ये जगहों के नाम और ये बातें मैं इसलिए वर्णन कर देता हूँ कि कुछ अहमदी जो वहां सफ़र करने वाले, उमरा करने वाले हैं जो उमरा को जाते हैं वह तारीख़ से वाक़फ़ीयत की वजह से उन जगहों पर भी जाना चाहते हैं तो ज़रा इन जगहों का परिचय हो जाता है।

ग़ज़व-ए-बूवात। रबीउल अव्वल सन् दो हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीने का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया और अपने दो सौ सहाबा की साथ में क़ुरैश के एक क़ाफ़िले को रोकने के लिए निकले। इस क़ाफ़िले में उमय्यह बिन खलफ भी मौजूद था और सौ अन्य क़ुरैशी थे और दो हज़ार पाँच सौ ऊंट थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रज़वा के निकट में बोवात पहुंचे परंतु वहां किसी से सामना न हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा लौट आए। इस ग़ज़वे में झंडे का रंग सफ़ैद था जिसे साद बिन अबी वक्कास ने उठा रखा था। बुवात के बारे में लिखा है कि यह जुही क़बीले के दो पहाड़ हैं जो मक्के से शाम जाने वाले रास्ते पर वाक़्य हैं। उनके साथ रज़ का मशहूर पहाड़ है। मदीने से बुवात का फ़ासिला तक़रीबन सौ किलो मीटर है। (सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 204 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 ह)

ग़ज़वा उशी। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि क़ुरैश का एक तिजारती क़ाफ़िला मक्के से निकला है और मक्का वालों ने इस तिजारती क़ाफ़िले में अपना सारा माल लगा दिया था इसलिए कि जो मुनाफ़ा हो वह मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग में इस्तिमाल हो। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुमादीउल ऊला या एक रिवायत के मुताबिक़ जुमादीउल-सानी दो हिज्री में मदीने से डेढ़ सौ या दो सौ लोगों के साथ आज़म-ए-सफ़र हुए। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उशयरह मुक़ाम पर पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि क़ुरैश का तिजारती क़ाफ़ला आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पहुंचने से चंद दिन पहले ही वहां से जा चुका है। मक्के और मदीने के दरमयान बनू मुद्लज् के इलाक़े में यनबू के निकट में एक मुक़ाम का नाम अशीरा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चंद रोज़ वहां क़ियाम फ़रमाया और बनू मुद्लज् और बनू ज़मरः में से उस के हलीफ़ों से सुलह का मुआहिदा किया और इसके बाद मदीना वापस तशरीफ़ ले आए। ये क़ुरैश मक्का का वही तिजारती क़ाफ़िला था जिसकी शाम से वापसी पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुबारा उसके तआक़ुब में निकले थे और बदर का मार्का पेश आया था।

(अल्हुदा, भाग 4 पृष्ठ 17 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 201 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची 2003ई.)

ग़ज़व-ए-बदर ऊला। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़व-ए--अशीरा से मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो अभी दस दिन भी न गुज़रे थे कि करज़ बिन जाबिर ने मदीना की चरागाह पर हमला कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसका पीछा करने में निकले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना नायब मुक़र्रर किया। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर के क़रीब सफ़वान नामी वादी में पहुंचे। सफ़वान बदर के नवाह में एक वादी है लेकिन कुरज़ बिन जाबिर तेज़ी से आगे निकल गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे न पा सके। इस ग़ज़वे को ग़ज़व--ए-बदर ऊला भी कहते हैं। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस मदीना तशरीफ़ ले आए।

(सीरत इब्ने हशाम पृष्ठ 412 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(एटलस सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 206 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 ह)

बदर अल् ऊला इसलिए कहते हैं क्योंकि बदर के एक जानिब सफ़वान स्थान तक मुस्लमानों का लश्कर पहुंचा था।

(अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2 , पृष्ठ 177 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) यह सीरत अल्हलबिया में वर्णन हुआ है।

कर्ज़ बिन जाबिर के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने तफ़सील लिखी है। वह कहते हैं कि "कुर्ज़ बिन जाबिर का यह हमला एक मामूली बद्दूओं की तरह की ग़ारतगरी नहीं थी बल्कि निसन्देह वह क़ुरैश की तरफ़ से मुस्लमानों के ख़िलाफ़ ख़ास इरादे से आया था बल्कि बिल्कुल संभव है कि इसकी नीयत ख़ास आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात को नुक़्सान पहुंचाने की हो परंतु मुस्लमानों को होशयार पा कर उनके ऊंटों पर हाथ साफ़ करता हुआ निकल गया। इस से यह भी मालूम होता है कि क़ुरैश मक्का ने यह इरादा कर लिया था कि मदीना पर छापे मार मार कर मुस्लमानों को तबाह व बर्बाद किया जाए। यह भी याद रखना चाहिए कि ग़व्वास से पहले मुस्लमानों को तलवार के जिहाद की इजाज़त हो चुकी थी और उन्होंने ख़ुद हिफ़ाज़ती के ख़्याल से उसके मुताल्लिक़ इबतेदाई कार्रवाई भी शुरू कर दी थी लेकिन अभी तक उनकी तरफ़ से कुफ़्फ़ार को अमलन किसी किस्म का माली या जानी नुक़्सान नहीं पहुंचा था लेकिन करज़ बिन जाबिर के हमला से मुस्लमानों को अमलन नुक़्सान पहुंचा। गोया मुस्लमानों की तरफ़ से क़ुरैश का चैलेंज क़बूल कर लिए जाने के बाद भी अमली जंग में कुफ़्फ़ार ही की पहल रही।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 330 ऐडीशन 1996 ई.)

फिर सरिया अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ियल्लाहु अन्हो है। यह सरिया मक्के के क़रीब वादई नख़ला में हुआ। इसके बारे में लिखा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रजब के महीने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ियल्लाहु अन्हो को आठ मुहाजेरीन के हमराह रवाना फ़रमाया। उनमें अंसार का कोई शख़्स नहीं था। और उन्हें एक ख़त लिख कर दिया और हिदायत फ़रमाई कि इस ख़त को दो दिन सफ़र तै करने के बाद देखना और इस में दिए गए हुक्म के मुताबिक़ अमल करना और अपने किसी साथी को अपने साथ चलने पर मजबूर न करना। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने दो दिन सफ़र करने के बाद वह हुक्मनामा खोल कर पढ़ा तो इस में लिखा था कि जब तुम मेरे इस ख़त को खोल कर देखो तो अपना सफ़र जारी रखो यहां तक कि मुक़ाम नख़ला में जो तायफ और मक्के के दरमयान है जा पहुंचना और वहां क़ुरैश की सरगर्मीयों पर नज़र रखना और उनके हालात से हमें आगाह करना। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह तहरीर देखी तो कहा मुझ पर सुनना और इताअत करना वाजिब है और फिर अपने साथियों से आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं नख़ला की तरफ़ जाऊं और वहां क़ुरैश की सरगर्मीयों पर नज़र रखों ताकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश के हालात से आगाह करूँ और मुझे मना फ़रमाया है कि तुम में से किसी को अपने साथ चलने पर मजबूर करूँ। अतः जो तुम में से शहादत की आरज़ू रखता है वह मेरे साथ चले और जो वापस जाना पसंद करे वह चला जाए परंतु उनके साथियों में से कोई वापस न पल्टा और सब हिजाज़ की तरफ़ रवाना हो गए। रास्ते में एक मुक़ाम पर हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वा का ऊंट गुम हो गया। वे दोनों उस की तलाश में पीछे रह गए जबकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हो बाक़ी साथियों के साथ मुक़ाम नख़ला में पहुंच गए। वहां क़ुरैश के एक क़ाफ़िला का गुज़र हुआ जो किशमिश, चमड़ा और क़ुरैश का सामान तिजारत का उठाए जा रहा था। इस क़ाफ़िला में अमर बिन हज़र भी शामिल था। जब क़ुरैश मक्का ने मुस्लमानों को देखा तो ख़ौफ़ज़दा हो गए। हज़रत उकाशह बिन महसन रज़ियल्लाहु अन्हो उनके सामने ज़ाहिर हुए। उन्होंने अपना सिर मुंडवा रखा था। कुफ़्फ़ार उनको देखकर संतुष्ट हो गए और कहने लगे कुछ डर की बात नहीं ये लोग उमरा करने जा रहे हैं। फिर मुस्लमानों ने वहां मश्वरा किया कि आज रजब का

आख़री रोज़ है। अगर हम उनसे लड़ते हैं और उनको क़तल करते हैं तो यह महीना हुर्मत वाला है और अगर आज इंतेज़ार करते हैं तो रातों रात ये हदूद हर्म में दाख़िल हो कर फिर हमारे हाथ नहीं आएँगे। आख़िर कार सबने इस बात पर सहयोग किया कि क़ाफ़िले पर हमला कर दिया जाए। यह तफ़सील सहाबा के वर्णन में एक दफ़ा पहले वर्णन हो चुकी है। हज़रत वाक़िद बिन अब्दुल्लाह तमी ने एक तीर अमर बिन हज़रमी के ऐसा मारा जिससे वह मर गया और दो आदमियों को मुस्लमानों ने क़ैद कर लिया जबकि एक भागने में कामयाब हो गया। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ऊंटों और इन दोनों क़ैदियों को लेकर मदीने में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ियल्ला-हु अन्हो मदीना में आए तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि मैं ने तुम्हें यह हुक्म तो नहीं दिया था कि तुम हुर्मत वाले महीने में जंग करो और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऊंटों और दोनों क़ैदियों को ठहरा दिया और उनमें से कोई चीज़ भी क़बूल करने से इन्कार कर दिया।

(सीरत इब्ने हशाम, पृष्ठ 412 से 414 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

यह जो कहते हैं कि माल लौटना उद्देश्य था। माल लौटना उद्देश्य नहीं था, नहीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन को शाबाश देते कि तुमने अच्छा किया बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो फ़रमाया कि तुमने बड़ा ग़लत काम किया है।

"दूसरी तरफ़ क़ुरैश ने भी शोर मचाया कि मुस्लमानों ने शहर हराम की हुर्मत को तोड़ दिया है और चूँकि जो शख़्स मारा गया था अर्थात अम्र बिन अल्हज़रमी वह एक रईस आदमी था और फिर वो उत्बा् बिन रबीह रईस-ए-मक्का का हलीफ़ भी था इस लिए भी इस वाक़िया ने क़ुरैश की आतिश ग़ज़ब को बहुत भड़का दिया और उन्होंने आगे से भी ज़्यादा जोश-ओ-ख़ुरोश के साथ मदीना पर हमला करने की तैयारी शुरू कर दी। इसलिए बदर .. ज़्यादा-तर क़ुरैश की इसी तैयारी और जोश अदावत का नतीजा था। अल्-ग़र्ज़ इस वाक़या पर मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार हर दो में बहुत चह-मगोई हुई और अंततः निम्नलिखित क़ुरआन की वह्यी नाज़िल हो कर मुस्लमानों की तश्फ़ी का माध्यम हुई।" अल्लाह तआला फ़रमाता है।

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ۔ یَسْئَلُوْنَکَ عَنِ الشَّھْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِیْہِ قُلْ قِتَالٌ فِیْہِ کَبِیْرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَ کُفْرٌ بِہٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاِخْرَاجُ اَھْلِہٖ مِنْہُ اَکْبَرُ عِنْدَ اللّٰہِ وَ الْفِتْنَۃُ اَکْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَ لَا یَزَالُوْنَ یُقَاتِلُوْنَکُمْ حَتّٰی یَرُدُّوْکُمْ عَنْ دِیْنِکُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا

(अल्बकरः : 218) यानी "लोग तुझसे पूछते हैं कि शहर हराम में लड़ना कैसा है? तो उनको जवाब दे कि बेशक शहर हराम में लड़ना बहुत बुरी बात है, लेकिन शहर हराम में ख़ुदा के दीन से लोगों को जबरन रोकना बल्कि शहर हराम और मस्जिद हराम दोनों का कुफ़्र करना अर्थात उनकी हुर्मत को तोड़ना और फिर हर्म के इलाक़ा से इस के रहने वालों को ताकत से निकालना जैसा कि हे मश्रिक़ो तुम लोग कर रहे हो ये सब बातें ख़ुदा के नज़दीक शहर हराम में लड़ने की निसबत भी ज़्यादा बुरी हैं और यक़ीनन शहर हराम में देश के अंदर फ़ित्ना पैदा करना इस क़तल से बदतर है जो फ़ित्ना को रोकने के लिए किया जाए। और हे मुसलमानो कुफ़्फ़ार का तो यह हाल है कि वह तुम्हारी अदावत में इतने अंधे हो रहे हैं कि किसी वक़्त और किसी जगह भी वह तुम्हारे साथ लड़ने से बाज़ नहीं आएँगे और वह अपनी यह लड़ाई जारी रखेंगे यहाँ तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें बशर्तिके वह उसकी ताक़त पाएं।"

बहरहाल अल्लाह तआला के इलम में तो था कि यह कुफ़्फ़ार मुस्लमानों को दीन से फेरने के लिए प्रयास करते रहेंगे और इसलिए उस वक़्त जो अमल हुआ उस पर अल्लाह तआला ने कोई नाराज़गी का इज़हार नहीं किया।

"इसीलिए तारीख़ से साबित है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ क़ुरैश के सरदार अपने ख़ूनी प्रापेगंडे को पवित्र महीनों में भी बराबर जारी रखते थे बल्कि पवित्र महीनों के अजतेमाओं और सफ़रों से फ़ायदा उठाते हुए वह इन महीनों में अपनी मुफ़सेदाना कार्यवाईयों में और भी ज़्यादा तेज़ हो जाते थे और फिर कमाल बे-हयाई से अपने दिल को झूठी तसल्ली देने के लिए वह इज़्ज़त के महीनों को अपनी जगह से इधर उधर मुंतक़िल भी कर दिया करते थे जिसे वह नसी नाम से पुकारते थे अतः इस जवाब से मुस्लमानों की तो तसल्ली होनी ही थी क़ुरैश भी कुछ ठंडे पड़ गए।' उन्हें पता लग गया कि वह्यी हुई है। "और इस दौरान में उनके आदमी भी अपने दो क़ैदियों को छुड़ाने के लिए मदीना पहुंच गए लेकिन चूँकि अभी तक साद बिन अबी वक्क़ास और उत्बा वापस नहीं आए थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके मुताल्लिक़ सख़्त संदेह था कि यदि वे क़ुरैश के हाथ पड़ गए तो क़ुरैश उन्हें ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी वापसी तक क़ैदियों को छोड़ने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि मेरे आदमी बख़ैरियत मदीना पहुंच जाऐंगे तो फिर मैं तुम्हारे आदमियों को छोड़ दूँगा। इसलिए जब वे दोनों वापस पहुंच गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़िद्या लेकर दोनों क़ैदियों को छोड़ दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 332 से 334)

ग़ज़व-ए-बदर अल्कुबरा। क़ुरआन-ए-करीम में इस ग़ज़वे को यौमुल फ़ुरकान क़रार दिया गया है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ुर्क़ान जंग बदर का दिन था जिस दिन कि मुख़ालिफ़ों की ज़बरदस्त ताक़त वाले इस सर गिरोह के हलाक हुए और मुस्लमानों को फ़तह और ग़लबा हासिल हुआ।"

(हक़ायकुल फ़ुरकान, भाग 3, पृष्ठ 235)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो एक और मुक़ाम पर शब्द फ़ुर्क़ान का मतलब वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं। "क़ुरआन से मुझे उसके ये माने मालूम हुए कि फ़ुर्क़ान नाम है उस फ़तह का जिसके बाद दुश्मन की कमर टूट जाए और यह बदर का दिन था।"

(हक़ायकुल फ़ुरकान, भाग 1 पृष्ठ 306)

इस ग़ज़वे को बदरुल सानीया या बदर अल् कुबरा, बदर अल् उज़्मा और बदरुल किताल भी कहा जाता है

(अलसीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 197 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (तारीख़ इब्ने ख़ुलदून, भाग दोम, पृष्ठ 426 दारुल फिक्र बेरूत 2000 ई.)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि अब्बू सुफ़ियान क़ुरैश का तिजारती क़ाफ़िला लेकर शाम से वापस आ रहा है जिसमें एक हज़ार ऊंट हैं। इस में क़ुरैश का बहुत बड़ा सरमाया था और अगर किसी के पास एक मिस्क़ाल अर्थात चार पाँच माशे भी सोने के वज़न के बराबर कुछ सोना था या माल था तो उसने वह माल भी इस क़ाफ़ले में लगा दिया था। कहा जाता है कि इस में एक कसीर रक़म का सरमाया था। इस क़ाफ़िले में तीस चालीस या एक रिवायत के मुताबिक़ सत्तर आदमी थे। यह वही क़ाफ़िला था जिसके तआक़ुब में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले भी निकले थे और मुक़ाम उशीर तक पहुंच गए थे लेकिन यह क़ाफ़िला शाम की जानिब जा चुका था। इस मुहिम के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुमादिउल अव्वल या जुमादिउल आखिर दो हिज्री को हुए।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस क़ाफ़िले की वापसी की इत्तला पा कर मुस्लमानों को अपने साथ निकलने की दावत दी और फ़रमाया कि यह क़ुरैश का तिजारती क़ाफ़िला है जिसमें उनके अम्वाल हैं। अतः तुम निकलो शायद अल्लाह तुम्हें माल-ए-ग़नीमत से नवाज़े।

(सबलुल हुदा, भाग 4, पृष्ठ 30 अनुवादक मौलाना ऊबे-दुर्राहमन मकतबा रह-मानिया लाहौर)(अल् रहीक अल्मख़्तूम उर्दू, पृष्ठ 272 अल्मकतब अल्सलफ़िया लाहोर 2000 ई.)

कुछ लोग जो केवल एतराज़ का अवसर ढूढ़ने के आदी होते हैं या कम इलम होते हैं वह एतराज़ करते हैं कि मुस्लमानों ने मदीने जा कर गोया लूट मार शुरू कर दी थी और बतौर मिसाल इसी क़ाफ़िले का तआक़ुब करना पेश कर देते हैं जो कि सरासर नादानी और जहालत की बात है और इस वक़्त के जंगी हालात से न वाक़फ़ीयत का नतीजा है क्योंकि क़ुरैश के इस तिजारती क़ाफ़िले को रोकना कोई काबिल एतराज़ अमर नहीं था। इसलिए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस की तफ़सील वर्णन की है कि "क़ाफ़िला की रोक-थाम के लिए निकलना हरगिज़ काबिल-ए-एतराज़ नहीं था क्योंकि अव्वल तो यह मख़सूस क़ाफ़िला जिस के लिए मुस्लमान निकले थे एक ग़ैर-मामूली क़ाफ़िला था जिसमें क़ुरैश के हर मर्द-ओ-औरत का तिजारती हिस्सा था जिससे मालूम होता है कि उसके मुताल्लिक़ क़ुरैश के सरदारों की यह नीयत थी कि इस का मुनाफ़ा मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने में इस्तमाल किया जाएगा। इसलिए तारीख़ से साबित है कि यही मुनाफ़ा जंग अहद की तैयारी में खर्च किया गया। अतः उस क़ाफ़िला की रोक-थाम तदाबीर-ए-जंग का ज़रूरी हिस्सा थी। दूसरे आम तौर पर भी क़ुरैश के क़ाफ़िलों की रोक-थाम इस लिए ज़रूरी थी कि चूँकि यह क़ाफ़िले जंगी समानों के साथ होते थे और मदीना से बहुत क़रीब हो कर गुज़रते थे उनसे मुस्लमानों को हर वक़त ख़तरा रहता था जिसका निवारण करना ज़रूरी था। तीसरे यह क़ाफ़िले जहां-जहां से भी गुज़रते थे मुस्लमानों के ख़िलाफ़ क़बायल अरब में सख़्त जोश भड़काने वाली बाते करते फिरते थे जिसकी वजह से मुस्लमानों की हालत

नाज़ुक हो रही थी। अतः उनका रास्ता बंद करना दिफ़ा और ख़ुद हिफ़ाज़ती के प्रोग्राम का हिस्सा था। चौथे क़ुरैश का गुज़ारा ज़्यादा-तर तिजारत पर था इस लिए इन क़ाफ़लों की रोक-थाम ज़ालिम क़ुरैश को होश में लाने और उन को उनकी जंगी कार्यवाईयों से बाज़ रखने और सुलह और क़ायम-ए-अमन के लिए मजबूर करने का एक बहुत उम्दा ज़रीया थी।" आजकल के ज़माने में इस तरह जंगों को रोकने के लिए कुछ मुल्क sanctions लगाते हैं। वह भी ग़लत sanctions लगा देते हैं और ज़ुलम से लगाते हैं लेकिन यह भी इसी तर्ज़ का sanction लगाने वाला एक अमल था।" और अमुक क़ाफ़लों की रोक-थाम के उद्देश्य लूट मार नहीं थी बल्कि जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ स्पष्ट वर्णन करता है ख़ुद इस ख़ास मुहिम में मुस्लमानों को क़ाफ़िला की ख़ाहिश उसके अम्वाल की वजह से नहीं थी बल्कि इस वजह से थी कि इस के मुक़ाबला में कम तकलीफ़ और कम मशक़्क़त का अंदेशा था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 343-344 ऐडीशन 1996 ई.)

बहरहाल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस क़ाफ़िले की ख़बर रसानी के उद्देश्य से अपने दो सहाबा हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को आगे रवाना कर दिया। ये दोनों अस्हाब मदीना से रवाना हो गए और जब क़ाफ़िले से मुताल्लिक़ ख़बरें मालूम करने के बाद मदीना वापस आए तो उन्हें मालूम हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से रवाना हो चुके हैं। इसलिए ये दोनों बदर की जानिब रवाना हुए परंतु रास्ते में उनकी मुलाक़ात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उस वक़्त हुई जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ज़व-ए-बदर से फ़ारिग़ होने के बाद वापस तशरीफ़ ला रहे थे। इसलिए ये दोनों अस्हाब ग़ज़व-ए-बदर में शामिल तो न हो सके परंतु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन के लिए भी माल--ए-ग़नीमत का हिस्सा निकाला।

(अल्सीरतुल हल्बिया, भाग 2 , पृष्ठ 203 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान को इस के जासूसों की तरफ़ से ये ख़बर मिली कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को लेकर उसके तिजारती क़ाफ़िले पर हमला करने के लिए रवाना हो चुके हैं। यह भी कहा जाता है कि अबूसुफ़ियान को एक आदमी मिला था जिसने उसे बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुरू ही से इस क़ाफ़िले का रास्ता रोकना चाहते थे और यह कि अब उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रास्ते में इस क़ाफ़िले की वापसी का इंतेज़ार करते छोड़ा है।

यह ख़बर सुनकर अबूसुफ़ियान बहुत ख़ौफ़ज़दा हुआ और उसने ज़मज़म बिन अमर ग़िफारी नामी एक आदमी को कुछ उजरत देकर मक्के की जानिब रवाना किया और इस से कहा कि वह मक्का जा कर उन्हें बताए कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने साथियों के साथ तुम्हारे क़ाफ़िले पर हमला के लिए निकल पड़ा है।

इसीलिए ज़मज़म निहायत तेज़ रफ़्तारी के साथ रवाना हो गया।

(अलसीतुल हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 197 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

"जब अबूसुफ़ियान का यह क़ासिद मक्का पहुंचा तो उसने अरब के दस्तूर के मुताबिक़ एक निहायत वहशत-ज़दा हालत बना कर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया कि हे अहल-ए-मक्का! तुम्हारे क़ाफ़िला पर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उसके अस्हाब हमला करने के लिए निकले हैं। चलो और उसे बचा लो।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए, पृष्ठ 350 ऐडीशन 1996 ई.)

दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान बड़ी होशयारी के साथ मालूमात लेते हुए मुस्लमानों के इस लश्कर से बचते हुए सफ़र जारी रखे हुए था। वह बदर के चशमा पर पहुंचा तो उसने वहां एक शख़्स से पूछा कि यहां तुम्हें कोई नज़र आया? उसने कहा यहां दो बंदे आए थे और इस टीले के क़रीब अपने ऊंट बिठाए और पानी लेकर चले गए। अब्बू सुफ़ियान ऊंटों वाली जगह पर गया। वहां ऊंटों की मेंगनियां पड़ी हुई थीं। उसने एक उठाई और उसको तोड़ा तो इस में खजूर की गुठली थी। उसने देख कर कहा यह यसरब का चारा है और समझ लिया कि मदीने वाले उसके क़रीब ही कहीं हैं। इसलिए वह तेज़ी से अपने क़ाफ़िले की तरफ़ वापस आया और अपने साथियों को मारूफ़ रास्ते से हटा कर साहिल समुंद्र की तरफ़ निकल गया और बदर को एक तरफ़ छोड़ते हुए तेज़ी से आगे गया।

(अल् रहीक् अलमख़्तूम (अनुवादक पृष्ठ 282-283 मकतबा सिफ़लिया लाहौर 2000 ई.)

इस बारे में आतिका बिंत अब्दुल मुत्लिब का एक अजीब ख़ाब भी है और वह ख़ाब बड़ा सच्चा साबित हुआ। वह ख़ाब इस तरह है कि आतका बिंत अब्दुल मुतलिब जो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी और उम्मुल मोमनीन हज़रत उम्मे सालमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा थीं उनके इस्लाम लाने के बारे में दोनों तरह की आरा हैं। कुछ के नज़दीक उन्होंने इस्लाम क़बूल किया था लेकिन अक्सर के नज़दीक उन्होंने इस्लाम क़बूल नहीं किया था। बहरहाल उन्होंने अबूसुफ़ियान के क़ासिद ज़मज़म के मक्का पहुंचने से तीन रात पहले एक ख़ाब देखी थी जिसने उन्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया। उन्होंने अपने भाई अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब को बुला भेजा और कहा कि भाई! बख़ुदा मैंने आज रात एक ख़ाब देखा है जिसने मुझे बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा कर दिया है। मुझे यह अंदेशा है कि तुम्हारी क़ौम को ज़रूर कोई आफ़त या मुसीबत पहुंचने वाली है। तुम इस राज़ को पोशीदा रखना जो मैं तुम्हें बताने वाली हूँ। एक रिवायत में है कि आतका ने अब्बास से कहा कि जब तक तुम मुझसे यह अह्द नहीं करोगे कि तुम इस बात का किसी से वर्णन नहीं करोगे उस वक़्त तक मैं तुम्हें नहीं बतलाऊंगी क्योंकि अगर क़ुरैश मक्का ने यह बात सुन ली तो वह हमें परेशान करेंगे और हमें बुरा-भला कहेंगे। इसलिए हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे अह्द किया। बहरहाल फिर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा कि तुमने क्या देखा है। आतका ने कहा मैंने ख़ाब देखा कि एक शख़्स ऊंट पर सवार आया और अब के मैदान में खड़ा हो गया। मक्का और मिना दोनों को अब कहा जाता है और यह मिना के ज़्यादा क़रीब है। फिर उसने बुलंद आवाज़ से चीख़ कर कहा। लोगो! अपने क़त्ल-गाहों की तरफ़ तीन दिन के अंदर अंदर चले आओ। आतका वर्णन करती हैं कि फिर मैंने देखा कि लोग इस शख़्स के पास जमा हो गए फिर वह मस्जिद अर्थात ख़ाना काअबा में दाख़िल हुआ। लोग इसके पीछे पीछे थे। इस दौरान कि लोग उसके गर्द जमा थे मैंने देखा कि इस का ऊंट उस को लेकर काबे की छत पर खड़ा है। फिर उसने इसी तरह चीख़ कर कहा हे लोगो! अपनी क़त्ल-गाहों की तरफ़ तीन दिन के अंदर अंदर चले जाओ। फिर मैंने देखा कि इस का ऊंट उस को जबल अबू कुबे कूबेस की चोटी पर लेकर खड़ा हो गया। कोह अबू कूबेस के बारे में लिखा है कि मक्का के पूर्व में एक मशहूर पहाड़ का नाम है। फिर वहां से भी इसी तरह बुलंद आवाज़ में पुकारा। फिर उसने एक पत्थर इस पहाड़ में से नीचे लुढका दिया और नीचे पहुंचते ही वह पत्थर टुकड़े टुकड़े हो गया और मक्के के घरों में से कोई घर और कोई मकान ऐसा बाक़ी न रहा जिसमें इस पत्थर का एक टुकड़ा न गया हो।

यह सुनकर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो आतका से कहा बख़ुदा यह ख़ाब तो बड़ा अहम है। तुम ख़ुद भी इस को पोशीदा रखना और उसका वर्णन किसी से न करना। इस के बाद हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो आतका के घर से निकले और रास्ते में वलीद बिन अतबा से मिले। यह हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो का दोस्त था। उन्होंने अपनी बहन को तो कह दिया कि वर्णन न करना लेकिन ख़ुद वलीद से इस ख़ाब का वर्णन कर दिया। जबकि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को मना कर दिया कि किसी से इस का वर्णन न करना लेकिन एक दफ़ा जब बात निकले तो फिर तो निकल जाती है। वलीद ने अपने बाप उत्बा से इस का वर्णन कर दिया। इस तरह ये बात मक्के में फैल गई और जहां दो आदमी बैठते उसी ख़ाब का वर्णन करते। अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अगले रोज़ सुबह जब मैं ख़ाना काअबा में तवाफ़ करने के लिए गया तो वहां अबुजहल क़ुरैश के चंद लोगों के साथ बैठा हुआ था। मुझे देखकर कहने लगा कि हे अबुल्-फ़ज़ल यह हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की कुनिय्यत है। तवाफ़ से फ़ारिग़ हो कर ज़रा मेरे पास से होते जाना। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं तवाफ़ से फ़ारिग़ हो कर उस के पास गया तो अबुजहल ने मुझसे कहा हे बनू अब्दुल मुतलिब तुम में नबी्यह कब से पैदा हो गई?

मैंने कहा क्या मतलब? उसने कहा कि तुम्हारे मर्दों ने तो नबुव्वत का दावा किया था अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ इशारा किया। अब तुम्हारी औरतें भी नबुव्वत का दावा करने लगी हैं। यह आत्का ने क्या ख़ाब देखी है? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने कहा उसने क्या ख़ाब देखी है? अबुजहल ने कहा वह कहती है कि मैंने एक शख़्स को ऊंट पर आते देखा और उसने यह आवाज़ दी और फिर एक पत्थर पहाड़ पर से लुढ़काया, ग़रज़-कि सारा ख़ाब वर्णन किया। फिर अबुजहल कहने लगा कि हम तीन रोज़ तक इंतेज़ार करते हैं अगर इसी तरह ख़ाब के मुताबिक़ यह वाक़िया ज़हूर में आगया तो ठीक है अन्यथ हम एक तहरीर लिख कर काअबा में लटका देंगे कि तुम लोग समस्त अरब में सबसे ज़्यादा झूठे हो। अब्बास कहते हैं कि बख़ुदा मुझे बेबस हो कर इस ख़ाब को झुटलाना पड़ा। इस को मैंने कह दिया कि उसने कोई ख़ाब नहीं देखी और मैंने इस बात का इंकार कर दिया कि आतका ने कोई ख़ाब देखी है। फिर हम सब लोग इस मज्लिस से उठ गए

और शाम को जब मैं घर गया तो बनू अब्दुल मुतलिब की समस्त औरतें मेरे पास आईं और मुझसे कहा। पहले वह ख़बीस फ़ासिक़ तुम्हारे मर्दों पर इल्ज़ाम तराशी करता रहा तो तुमने इसे बर्दाश्त कर लिया। अब औरतों को भी बुरा कहता है और तुम ख़ामोशी से सुन रहे हो और इस की बेहूदागोई का कोई जवाब उस को न दिया। तुम्हारी ग़ैरत कहाँ चली गई! तो ख़ानदान की औरतों ने उनको ज़रा ग़ुस्सा दिलाया। अब्बास कहते हैं कि मैंने बख़ुदा! मैं ने ऐसे ही किया। मेरे नज़दीक इस से बढ़कर कोई जुर्म नहीं और अल्लाह की क़सम मैं अब उसके पास जाऊँगा और अगर उसने फिर कोई ऐसी बात कही तो मैं उस का काम अंत करने के लिए तुम्हारी तरफ़ से उसकी तलाफ़ी कर दूँगा।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि आतका के ख़ाब के तीसरे रोज़ में सुबह घर से निकला और मैं सख़्त ग़ुस्से में था कि मुझसे उस दिन जो कोताही हुई आज उस का बदला लूँगा। इसलिए जब मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो मैंने अबुजहल को देखा। वह फुर्तीले बदन वाला तेज़ ज़बान शख़्स था। बख़ुदा मैं इस की तरफ़ बढ़ाता कि वह दुबारा कोई इस तरह की बात करे जैसी उसने पहले की थी और मैं इस का हिसाब बराबर कर दूं लेकिन मैं क्या देखता हूँ कि अबुजहल भागा हुआ मस्जिद अर्थात ख़ाना काअबा के दरवाज़े की तरफ़ जा रहा है। मैं ने अपने दिल में सोचा कि इस पर अल्लाह तआला की लानत हो, उस को क्या हुआ क्या वह इस ख़ौफ़ से भाग गया है कि कहीं मैं उसे बुरा-भला न कहूं लेकिन दरहक़ीक़त वह बात यह थी कि उसने ज़मर बिन अमर ग़फ़फारी की बुलंद आवाज़ सुन ली थी जो मुझे सुनाई न दी और वह अर्थात ज़मर वादी के दरमयान अपने ऊंट पर खड़ा बुलंद आवाज़ से पुकार रहा था। उसने अपने ऊंट की नाक और कान काट दिए थे। अपने कुजावे को उल्टा कर दिया और अपनी क़मीस फाड़ डाली थी और वह यह पुकार रहा था क़ाफ़िला! क़ाफ़िला! अर्थात अपने इस क़ाफ़िले को बचाओ इस पर तुम्हारे अम्वाल-ए-तिजारत लदे हुए हैं जो अबूसुफ़ियान के साथ आ रहा है। इस पर हमला करने के लिए मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उस के साथियों ने चढ़ाई कर दी है। मेरे गुमान में भी यह नहीं कि तुम बरवक़्त पहुंच जाओ अर्थात जिस क़दर हो सके वहां पहुंचने में जल्दी करो मुझे नहीं लगता कि तुम उस की मदद के लिए पहुंच सको। बहरहाल अब्बास कहते हैं कि इस नए हादिसे ने मुझे भी और उसे भी इस क़दर मशग़ूल कर दिया कि हम इस पहली बात पर तवज्जा न दे सके।

(अलसीरतुल नब्वी ले इब्ने हशाम, पृष्ठ 416-417 ग़ज़व बदर अल्कुबरा वर्णन रोया आतका बिंत अब्दुल् मुतलिब, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(अलसी-रतुल,हल्बिया भाग 2, पृष्ठ 198 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2002 ई.) (किताबुल मग़ाज़ी लिल् वाकदी , भाग प्रथम, पृष्ठ 30 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)(अल् असाब, भाग 8 पृष्ठ 229 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1995 ई.) (ओसोदुल ग़ाबा, भाग 7, पृष्ठ 183 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.) (मोअ-ज्जमुल बुलदान, भाग 1 पृष्ठ 95 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 230 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

लिखा है कि जब क़ुरैश मक्का ने ज़मज़म की पुकार सुनी तो वह बहुत तैश में आ गए और लोगों को जंग की तैयारी के लिए उभारने लगे। वह कहने लगे क्या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उसके साथी यह ख़्याल करते हैं कि यह इब्ने हज़र के तिजारती क़ाफ़िले की तरह है। हरगिज़ नहीं। ख़ुदा की क़सम उनको पता चल जाएगा कि यह ऐसा नहीं है।

अम्र बिन हज़रमी के क़ाफ़िला और मुस्लमानों के हाथों उस के क़तल का वर्णन सरिया अब्दुल्लाह बिन जह्श में हो चुका है। अभी पहले मैं ने बताया जिसमें मुस्ल-मानों ने निहायत आसानी से इब्ने हज़रमी को क़तल कर दिया था और उसके माल--ओ-सामान पर क़बज़ा किया था। बहरहाल अब क़ुरैश मक्का तैयारी करने लगे और हर कोई जंग के लिए या तो ख़ुद निकल रहा था या अपनी जगह अपने ख़र्च पर किसी और को भेज रहा था। उनके एक रईस सरदार ने कहा। क्या तुम मुहम्मद (सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उसके साबी साथियों और अहल-ए-यसरिब को इस बात की इजाज़त दे दोगे कि वह तुम्हारे माल लूट के ले जाएं? जिस शख़्स को मालकी ज़रूरत हो तो मेरा माल उस के लिए हाज़िर है और जिसको खाने पीने की चीज़ों की ज़रूरत है तो वह हाज़िर है और किसी ने दो सौ दीनार, किसी ने तीन सौ दीनार, किसी ने पाँच सौ दीनार दिए और कहा कि जहां चाहो और जैसे चाहो इस्तमाल करो। किसी ने बीस ऊंट जंग के लिए पेश किए। कुछ ने जंग पर जाने वालों के घर वालों का ख़र्चा उठाने की ज़िम्मेदारी उठाई और जो ख़ुद जंग पर नहीं जा सका उसने अपनी जगह अपने ख़र्च पर किसी दूसरे आदमी को रवाना किया और इस तरह दो या तीन दिन में जंग की तैयारी मुकम्मल हो गई।

(सिब्बलुल्हुदा वल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 21 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

यहां यह भी याद रखना चाहिए कि उसने तो ऐलान किया था कि फ़ौरी पहुँचो लेकिन दो तीन दिन उन्होंने जंग की ख़ूब तैयारी की और यह तैयारी करना ही बताता है कि मक्का के जो कुफ़्फ़ार थे वे मुस्लमानों से बाक़ायदा जंग का बहाना तलाश कर रहे थे। अन्यथा अगर केवल क़ाफ़िले को बचाना मक़सूद होता तो जिस तरह यह ख़बर दी गई थी फ़ौरी तौर पर पहुंच जाते। जिसके हाथ में जो हथियार आता, ले के चला जाता लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि वह क़ाफ़िले की बजाय जंग के लिए तैयारी कर के गए।

फिर क़ुरैश के सरदारों के बारे में लिखा है कि क़ुरैश के पाँच सरदार उमय्यह बिन खलफ, उत्बा बिन रबीह, शेबन रबीअह, ज़मआ बिन अस्वद और हकीम बिन हिजाम ने तीरों के ज़रीया क़ुरआ डाला कि जंग पर जाना चाहिए या नहीं जिसमें इंकार वाला तीर निकला कि ये लोग जंग में न जाएं अर्थात वह तीर निकला जिस पर लिखा होता था कि मत करो। इसलिए इन सबने मिलकर फ़ैसला कर लिया कि ये लोग जंग में नहीं जाऐंगे परंतु फिर उनके पास अबुजहल आया और उसने उन्हें ले जाने पर इसरार किया। इस सिलसिले में उक्बा बिन अबू मोताव्वर नज़र बिन हारिस ने भी अबुजहल का साथ दिया और उन लोगों को साथ ले जाने पर इसरार किया। उत्बा और शेवा के ग़ुलाम ने उनसे कहा कि ख़ुदा की क़सम आप दोनों जंग में नहीं बल्कि अपनी क़तलगाह में जा रहे हैं।

इस पर इन दोनों ने जंग में न जाने का फ़ैसला कर लिया था परंतु अबुजहल का इसरार इतना बढ़ा कि ये दोनों इस नीयत से सब के साथ जाने पर तैयार हो गए कि रास्ते से वापस आ जाऐंगे।

(अल्सीरतुल हल्बिया भाग 2, पृष्ठ 200-20 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2002 ई.)

जंग के लिए कुफ़्फ़ार की तैयारी और रवानगी की मज़ीद तफ़सील और इस के घटनाओं इन शा अल्लाह आगे वर्णन होंगे। काफ़ी तफ़सीली की बात है।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

के नाम एक धमकी आमेज़ ख़त लिखा। उन्होंने लिखा कि तुमने हमारे साथी को पनाह दी है और हम अल्लाह की क़सम खा कर कहते हैं कि ज़रूर तुम उस से जंग करो या उसे देश निकाला कर दो या हम सब मुत्तहिद हो कर तुम पर हमला-आवर होंगे और तुम्हारे जंगजूओं को क़तल कर देंगे और तुम्हारी औरतों को अपने मातहत कर लेंगे। जब यह ख़त अब्दुल् लाह बिन अबी और उसके बुत परस्त साथियों को मिला तो वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग करने के लिए इकट्ठे हो गए। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात की इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस से मिले और फ़रमाया क़ुरैश ने जो धमकी तुम्हें दी है वह तुम्हारे ख़्याल में बहुत बड़ी धमकी है हालाँकि वह तुम्हें इतना नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते जिस क़दर तुम ख़ुद अपने आपको नुक़्सान पहुंचा लोगे। तुम चाहते हो कि अपने बेटों और भाईयों से जंग करो। क्योंकि उनमें से बहुत से मुस्लमान हो चुके थे। जब यहूद ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ये बातें सुनें तो वे तो इधर उधर चले गए और इस को छोड़ गए।

(सुंन अबू दाऊद, किताब अल्ख़राज, बाब फ़ी ख़बर हदीस नम्बर : 3004)

इसी तरह क़ुरैश मक्का ने क़बायल अरब का दौरा करते हुए मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उनको उकसाना शुरू किया।

इसीलिए इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखा है कि "फिर उसी पर बस नहीं बल्कि जब क़ुरैश ने देखा कि ओस व ख़ज़रज मुस्लमानों की पनाह से दस्त-बरदार नहीं होते और अंदेशा है कि इस्लाम मदीना में जड़ न पकड़ जाए तो उन्होंने दूसरे क़बायल अरब का दौरा करकर के उनको मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उकसाना शुरू कर दिया और चूँकि बाव्जाह ख़ाना काअबा के मुतवल्ली होने के क़ुरैश का सारे क़बायल अरब पर एक ख़ास असर था इस लिए क़ुरैश की अंगेख़्त से कई क़बायल मुस्लमानों के जानी दुश्मन बन गए और मदीना का यह हाल हो गया कि गोया उसके चारों तरफ़ आग ही आग है।" (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 301)

इसीलिए एक रिवायत में वर्णन मिलता है कि हज़रत अबी बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके अस्हाब मदीना में तशरीफ़ लाए और अंसार ने उन्हें पनाह दी तो समस्त अरब एक क़ौस की मानिंद अर्थात एक जान हो कर उनके ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ। इसलिए उन दिनों मुस्लमानों का यह हाल था कि वे रातों को भी हथियार लगा कर सोते थे और दिन को भी हथियार लगाए फिरते थे और वह एक दूसरे से कहा करते थे कि देखिए हम उस वक़्त तक बचते भी हैं या नहीं कि हमें अमन की रातें गुज़ारने का अवसर मिलेगा और अल्लाह के सिवा किसी का डर न रहेगा।

(अल् मुस्तदरक अल्सहीहेन, किताब अल्तफ़सीर, तफ़सीर सूरत अल-नूर, हदीस 3512 भाग 2 , पृष्ठ 435 दारुल कुतुब इल्मिया 2002 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह हाल था कि "हज़रत आयश रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब शुरू शुरू में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में तशरीफ़ लाए तो दुश्मन के हमला के अंदेशा से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रातों को जागा करते थे।"

(अल्सुंन् अल्कुबरा लिल् निसाई, किताब अल् मनाकिब, साद इब्ने मालिक, हदीस 8217, भाग 5, पृष्ठ 61 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1991 ई.)

इसी ज़माने के मुताल्लिक़ क़ुरआन शरीफ़ फ़रमाता है

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ

(अल् अनफ़ाल : 27) मुसलमानो वह ज़माना याद करो जब तुम थोड़े थे और मुल्क में बहुत कमज़ोर समझे जाते थे और तुम्हें यह ख़ौफ़ लगा रहता था कि लोग तुम्हें उचक कर तबाह कर दें। फिर ख़ुदा ने तुम्हें पनाह दी और अपनी नुसरत से तुम्हारी ताईद फ़रमाई और तुम्हारे लिए पाकीज़ा रिज़्क़ के दरवाज़े खोले। अतः तुम्हें शुक्रगुज़ार हो कर रहना चाहिए।

यह बैरूनी ख़तरात थे जिनका क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन था। मदीना के अंदर भी हालात इतने साज़गार नहीं थे।

जैसा कि इस बारे में मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लखते हैं कि "मदीना के अंदरूनी हालत थे कि अभी तक एक सम्मानित हिस्सा ओस व ख़ज़रज का शिर्क पर क़ायम था और जबकि वह बज़ाहिर अपने भाई बंदों के साथ थे लेकिन इन हालात में एक मुशरिक का क्या एतेमाद किया जा सकता था। फिर दूसरे नंबर पर मुनाफ़ेक़ीन थे जो बज़ाहिर इस्लाम ले आए थे परंतु दरपर्दा वह इस्लाम के दुश्मन थे और मदीना के अंदर उनका वजूद ख़तरनाक एहतेमालात पैदा करता था। तीसरे दर्जा पर यहूद थे जिनके साथ गो एक मुआहिदा हो चुका था परंतु इन यहूद के नज़दीक मुआहिदा की कोई क़ीमत न थी। उद्देश्य इस तरह ख़ुद मदीना के अंदर ऐसा मवाद मौजूद था जो मुस्लमानों के ख़िलाफ़ एक मख़फ़ी ज़ख़ीरा-ए-बारूद से कम नहीं था और क़बायहल अरब की ज़रा सी चिंगारी इस बारूद को आग लगाने और मुस्लमानान-ए-मदीना को भक् से उड़ा देने के लिए काफ़ी थी। इस नाज़ुक वक़्त में जिससे ज़्यादा नाज़ुक वक़्त इस्लाम पर कभी नहीं आया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़ुदा की वही नाज़िल हुई कि अब तुम्हें भी इन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला में तलवार इस्तमाल करनी चाहिए जो तुम्हारे ख़िलाफ़ तलवार लेकर सरासर ज़ुलम और झगड़ों से मैदान में निकले हुए हैं और जिहाद तलवार के ज़ोर का ऐलान गया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए, पृष्ठ 302)

"तलवार के जिहाद के मुताल्लिक़ सबसे पहली आयत आँहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम पर 12 सिफ़र सन् 2 मुताबिक़ 15 अगस्त सन् 623 ई. को नाज़िल हुई जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मदीना में तशरीफ़ लाए क़रीबन एक साल का अरसा गुज़रा था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 303)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो तहक़ीक़ की है इसके मुताबिक़ आयत की यह तारीख़ बनती है क्योंकि इस सूरत के बारे में है कि कुछ हिस्सा मक्का में नाज़िल हुआ कुछ मदीना में लेकिन बहरहाल विभिन्न रिवायात हैं इस आयत के नुज़ूल के बारे में। यह भी रिवायत है कि हिज्रत के अवसर पर यह आयत नाज़िल थी।

(तफ़सीर-ए-कबीर, तफ़सीर सूरत अल्-हज ज़ेर आयत اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ, पृष्ठ: 2110)

क्योंकि मदीना में तशरीफ़ आवरी के कुछ ही अरसा बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना के इर्द-गिर्द क़ुरैश के क़ाफ़िलों की रोक-थाम और दीगर हिफ़ाज़ती उमूर के लिए जंगी समानों के साथ पार्टीयां भेजनी शुरू कर दी थीं। बहरहाल हिज्रत की इबतेदा में यह आयत नाज़िल हुई या वर्ष गुज़रने के बाद लेकिन यह पहली इजाज़त थी मज़हब के ख़िलाफ़ जंग करने वालों के जवाब में जंग करने की और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस हुकूमत से बाहर आ गए थे जिसके तहत पहले रहते थे। जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है हुकूमत में रहते हुए कोई जंग नहीं की जा सकती थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपनी एक हुकूमत क़ायम हो चुकी थी। यह आयत जिसमें अल्लाह तआला ने इजाज़त दी सूरः हज की आयत है बल्कि दो आयात हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ (सूरः हज : 40-41) इन लोगों को जिनके ख़िलाफ़ क़िताल किया जा रहा है क़िताल की इजाज़त दी जाती है क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए और यक़ीनन अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। अर्थात वह लोग जिन्हें उनके घरों से नाहक़ निकाला गया केवल इस बिना पर कि वह कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों का दिफ़ा उनमें से कुछ को कुछ दूसरों से भिड़ा कर न किया जाता तो राहिब ख़ाने मुनहदिम कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के मुआबिद भी और मसाजिद भी जिनमें बकसरत अल्लाह का नाम लिया जाता है और यक़ीनन अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उसकी मदद करता है। यक़ीनन अल्लाह बहुत ताक़तवर और कामिल ग़लबा वाला है। अर्थात समस्त मज़ाहिब की यहां हिफ़ाज़त की गई है। हर मज़हब की इबादत-गाह का नाम लेकर।

जिहाद फ़र्ज़ होने के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार के शर से मुस्लमानों को महफ़ूज़ रखने के लिए आरंभ में चार तदाबीर इख़तेयार कीं। इसलिए इन तदाबीर का वर्णन करते हुए भी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि "अव्वल आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुद सफ़र करके आस-पास के क़बायल के साथ बाहमी अमन-ओ-अमान के मुआहिदे करने शुरू किए ताकि मदीना के इर्दगिर्द का इलाक़ा ख़तरा से महफ़ूज़ हो जाए। इस बात में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुसूसियत के साथ इन क़बायल को मद्द-ए-

-नज़र रखा जो क़ुरैश के शामी रस्ते के क़ुरब-ओ-जवार में आबाद थे क्योंकि जैसा कि हर शख़्स समझ सकता है यही वे क़बायल थे जिनसे क़ुरैश मक्का मुस्लमानों के ख़िलाफ़ ज़्यादा मदद ले सकते थे और जिनकी दुश्मनी मुस्लमानों के वास्ते सख़्त ख़तरात पैदा कर सकती थी।

दोम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने छोटी छोटी ख़बररसां पार्टीयां मदीना के विभिन्न जिहात में रवाना करनी शुरू फ़रमाएं ताकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ुरैश और उन के सहयोगी हलीफ़ जो थे उनकी हरकात व सकनात का इल्म होता रहे और क़ुरैश को भी ये ख़्याल रहे कि मुस्लमान बे-ख़बर नहीं हैं और इस तरह मदीना अचानक हमलों के ख़तरात से महफ़ूज़ हो जाए।

सोम इन पार्टीयों के भिजवाने में एक मस्लिहत यह भी थी कि ताकि उसके ज़रीया से मक्का और इस के गिर्द-ओ-नवाह के कमज़ोर और ग़रीब मुस्लमानों को मदीना के मुस्लमानों में आ मिलने का अवसर मिल जाए। अभी तक मक्का के इलाक़ा में कई लोग ऐसे मौजूद थे जो दिल से मुस्लमान थे परंतु क़ुरैश के मज़ालिम की वजह से अपने इस्लाम का बरमला तौर पर इज़हार नहीं कर सकते थे और न अपनी ग़ुर्बत और कमज़ोरी की वजह से उनमें हिज्रत की ताक़त थी क्योंकि क़ुरैश ऐसे लोगों को हिज्रत से जबरन रोकते थे।

चौथी तदबीर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ये इख़्तेयार फ़रमाई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश के इन तिजारती क़ाफ़िलों की रोक-थाम शुरू फ़र्मा दी जो मक्का से शाम की तरफ़ आते-जाते हुए मदीना के पास से गुज़रते क्योंकि .. ये क़ाफ़िले जहां-जहां से गुज़रते थे मुस्लमानों के ख़िलाफ़ अदावत की आग लगाते जाते थे और ज़ाहिर है कि मदीना के गिर्द-ओ-नवाह में इस्लाम की अदावत का तुख़्म बोया जाना मुस्लमानों के लिए निहायत ख़तरनाक था।" फिर यह कि" ये क़ाफ़िले हमेशा मुसल्लह होते थे और हर शख़्स समझ सकता है कि इस किस्म के क़ाफ़िलों का मदीना से इस क़दर क़रीब हो कर गुज़रना हरगिज़ ख़तरा से ख़ाली नहीं था।" फिर यह बात भी है कि "..क़ुरैश का गुज़ारा ज़्यादा-तर तिजारत पर था और अंदरूनी हालात क़ुरैश को ज़ेर करने और उनको उनकी ज़ालिमाना कार्यवाईयों से रोकने और सुलह पर मजबूर करने का यह सबसे ज़्यादा यक़ीनी और प्रभावी माध्यम था कि उनकी तिजारत का रास्ता बंद कर दिया जाए। इसलिए तारीख़ इस बात पर शाहिद है कि जिन बातों ने अंततः क़ुरैश को सुलह की तरफ़ मायल होने पर मजबूर किया उनमें उनके तिजारती क़ाफ़िलों की रोक-थाम का बहुत बड़ा दख़ल था। अतः यह एक निहायत दानिशमंदाना तदबीर थी जो अपने वक़्त पर कामयाबी का फल लाई। फिर "..क़ुरैश के इन क़ाफ़िलों का नफ़ा बसा औक़ात इस्लाम को मिटाने के प्रयास में सर्फ होता था बल्कि कुछ क़ाफ़िले तो ख़ुसूसियत के साथ इसी ग़रज़ से भेजे जाते थे कि उनका सारा नफ़ा मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इस्तमाल किया जाएगा तिजारत जो होती थी इस्लाम के ख़िलाफ़ जंग करने के लिए कमाई करने के लिए तिजारत की जाती थी। "इस सूरत में हर शख़्स समझ सकता है कि इन क़ाफ़िलों की रोक-थाम ख़ुद अपनी ज़ात में भी एक बिल्कुल जायज़ मक़सूद थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 323 से 324)

बहर हाल यह सिलसिला अभी चलेगा बाक़ी इन शा अल्लाह आगे वर्णन होगा।

इस वक़्त में चंद मरहूमीन का वर्णन भी करना चाहता हूँ। उनकी नमाज़ जनाज़ा अदा होगी। उनमें से एक जनाज़ा हाज़िर है जो श्रीमान ख़्वाजा मुनीर उद्दीन क़मर साहिब का है बाक़ी जनाज़ा ग़ायब हैं। ख़्वाजा मुनीरुद्दीन क़मर साहिब यहीं यू.के में रहते थे। 27 मई को86 वर्ष की उम्र में बक़ज़ाए इलाही उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मियां ख़ैरुद्दीन सेखवानी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के पोते थे। आप के वालिद मौलाना क़मरुद्दीन साहिब को भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने छोटी उम्र में देखा है और उन्होंने आपको छोटी उम्र में देखा है। बहुत बचपना था। बहरहाल उनके वालिद मौलवी क़मरुद्दीन साहिब मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के पहले मर्कज़ी सदर थे। जब भारत पाकिस्तान की पार्टीशन हुआ तो ये लोग पाकिस्तान शिफ़्ट हो गए। फिर ख़्वाजा मुनीरुद्दीन साहिब कुछ अरसा के लिए तनज़ानिया अफ़्रीक़ा चले गए। रब्वाह में भी आपको विभिन्न हैसियत से जमाअत की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिली फिर ये 1966 ई. में अपनी फ़ैमिली के साथ यू.के आ गए और यहां मस्जिद फ़ज़ल के नज़दीक उनकी रिहायश थी। पुराने सब लोग उनको जानते हैं। ख़िलाफ़त-ए-राबिया के दौर में उन्हें लंबे अरसा तक मस्जिद फ़ज़ल में जुमा की अज़ान देने की भी तौफ़ीक़ मिली। मरहूम ने बतौर सदर जमाअत मस्जिद फ़ज़ल लंदन और पटनी ख़िदमत बजा लाने की तौफ़ीक़ भी पाई। 1995 ई. में रिटायरमैंट के बाद ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी और पिछली उनत्तीस साल से तोई तौर पर पहले यहां वकालत तिबशीर् में और बाद में दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी यू.के में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। वफ़ात से एक दिन क़बल भी नमाज़ ज़ुहर से पहले तक दफ़्तर में काम करते रहे फिर नमाज़ अदा करने के बाद घर वापस आए थे। पंचों समय नमाज़ों के पाबंद, बहुत ख़ामोश तबा, हमद-र्द, मिलनसार, नेक और मुख़लिस, बावफ़ा इन्सान थे। मरहूम मूसी भी थे। पत्नी के इलावा दो बेटे और दो बेटियां हैं और बहुत से पोते पोतीया नवासे नवासियाँ हैं। अमीर साहिब यू.के, के मामूं भी हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। यह तो जनाज़ा हाज़िर है जो इन शा अल्लाह अदा होगा

दूसरे जो जनाज़े ग़ायब हैं उनमें एक जनाज़ा साहिबज़ादा डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहिब का है जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के पोते और डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहिब और महमूदा बेगम साहिबा के बेटे थे और हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहुब रज़ियल्लाहु अन्हु के नवासे थे। उनकी उनासी वर्ष की उम्र में पिछले दिनों में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। इबतेदाई तालीम उनकी रब्वाह की थी। फिर किंग ऐडवर्ड मैडीकल कॉलेज लाहौर से एम.बी.बी ऐस किया। फिर कुछ देर रब्वाह के हस्पताल में काम किया। फिर यहां पढ़ने के लिए यू.के आए और रॉयल कॉलेज आफ़ सर्जनज़ एडिनबरा में उन्होंने 1970 ई. में पोस्ट ग्रेजवाएशन की और एफ़ आर सी ऐस किया। फिर वापस गए और वक़्फ़ थे तो वहां फ़ज़ल-ए-उमर हस्पताल में ख़िदमात बजा लाते रहे। तक़रीबन पच्चास साल उनको फ़ज़ल-ए-उमर हस्पताल में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। वहां नुसरत जहां के तहत काम करने वाले वाकफ़ीन ज़िंदगी डाक्टरों में सबसे ज़्यादा लंबा अरसा उन्होंने ख़िदमत की। शायद इससे ज़्यादा अरसा डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहिब का भी हो लेकिन बहरहाल उनको पच्चास साल ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1983 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे उन्हें वक़्फ़ जदीद बोर्ड का मैंबर भी मुक़र्रर फ़रमाया और तावफ़ात वक़्फ़ जदीद बोर्ड के मैंबर रहे

उनकी पत्नी लिखती हैं कि रिश्तों को बहुत निभाने वाले थे। बहुत ख़्याल रखने वाले थे। माँ बाप, बहन भाई, अज़ीज़ रिश्तेदारों, मेरे माँ बाप और रिश्तेदारों सब के साथ मुझे नहीं याद कि कोई अवसर ख़ुशी या ग़मी का कभी छोड़ा हो और ज़िम्मेदा-री अपने ऊपर ले लेते थे कभी रिश्तों को निभाने में सुस्ती नहीं दिखाई और घर के जितने बड़े बुज़ुर्ग थे उनके ईलाज की भी आपको तौफ़ीक़ मिली। घरों में बीमारों की बिमारपुर्सी करने के लिए जाते। इसी तरह ज़रूरतमंदों की हर तरह मदद करते थे। किसी सवाली को कभी इंकार नहीं किया। बहुत सी बच्चियों को तालीम दिलाई और शादियों तक उनके समस्त अख़राजात उठाए। कुछ बच्चियों ने तो मुझे भी लिखा है। ये उनके घर में भी रहें और बच्चों की तरह पाला और इस के बाद उनकी शादियां कीं। मरीज़ों की फ़ीस इत्यादि भी माफ़ कर दिया करते थे। कई लोगों ने इस बारे में भी मुझे लिखा है बल्कि अपने पास से दवाईयां और रक़म भी दे देते थे। ख़लिफ़ा के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ था। एक तो यह भी था कि अब तक जितनी भी ख़िलाफ़तें आई हैं उनके साथ रिश्तेदारी का भी ताल्लुक़ था दूसरा अदब और एहतेराम का भी बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ था और बच्चों को भी इसी का कहते रहते थे और ख़ुद भी अमल कर दिखाया।

मेरे से छः सात साल बड़े थे लेकिन ख़िलाफ़त के बाद हमेशा अदब और एहतेराम मैं ने देखा है बल्कि इस से पहले भी जब मैं नाज़िर आला था तो बहुत अदब और एहतेराम वाला उनका रवैय्या होता था।

उनकी पत्नी लिखती हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे की बेगम की जो आख़िरी बीमारी थी इस में हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह का फ़ोन आया कि डाक्टर मुबश्शिर को फ़ौरी भिजवाओ तो कहते हैं रातों रात ही यह पैग़ाम सुनकर वह निकल गए और उनकी वफ़ात तक फिर वहीं मौजूद रहे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह श्रीमती हज़रत आसिफ़ा बेगम साहिबा की वफ़ात पर फ़रमाया था कि मुबश्शिर मुझे लिफ़्ट के क़रीब लेने आया तो मैं मुबश्शिर को देखते ही समझ गया कि पत्नी की वफ़ात हो गई है क्योंकि यह मुझे पता है कि उनकी तबीयत ख़राब होती तो फिर मुबश्शिर उनको कभी अकेला न छोड़ता। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह बिमारी में भी आप ईलाज के लिए यूके आ जाते रहे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह भी एक जगह अपनी बीमारी के दौरान में उनकी ख़िदमात का वर्णन है।

उनकी पत्नी लिखती हैं कि एक दफ़ा आपकी कोई ग़लत शिकायत हुई उसकी

तहक़ीक़ात के लिए एक कमेटी बनी। इस वक़्त भी आपने ख़लीफ़-ए-वक़्त का और निज़ाम का एहतेराम किया और कोई भी नामुनासिब बात और रवैय्या नहीं दिखाया और कमेटी ने फिर सारी तहक़ीक़ की और आपको इस मुआमले में बुर करार दिया।

उनके बेटे ने लिखा कि चैनयूट और इर्द-गिर्द के इलाक़े से कुछ विरोध करने वाले भी छुप कर घर आकर ईलाज करवाया करते थे और बहुत सारे ग़ैर अहमदी उनके मरीज़ थे। मैं भी जानता हूँ। इलाक़े के बेशुमार लोगों का आपने ईलाज किया और इसकी वजह से रब्वाह का भी, हस्पताल का भी इलाक़े में बहुत परिचय था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी आख़िरी बिमारी में दवाई पीने के लिए जो चम्मच प्रयोग किया करते थे वह चमचा छोटा सा चाय का चम्मच था। हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह हज़रत उम्मे नासिर को यह कहते हुए दिया था कि जो बेटा डाक्टर बने उस को दे देना तो वह चम्मच आपके वालिद डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहिब को मिला और इसके बाद वह चम्मच आपके पास था। कई दफ़ा बरकत की ख़ातिर डाक्टर मुबश्शिर साहिब अपने मरीज़ों को भी इस से दवाई पिला दिया थे।

आपके अफ़सोस पर आने वालों में हर वर्ग के लोग शामिल थे लेकिन बहुत भारी अक्सरियत उन लोगों की थी जो ग़रीब वर्ग था और बार-बार इस बात का इज़हार करते थे कि मियां साहिब हमारे मुहसिन थे। किसी का ईलाज उन्होंने किया था और किसी का ख़्याल किसी और तरीक़े से रखा था। बहुत सारे इलाक़े के ज़मींदार हैं उनकी औरतें, उनकी बहनें ईलाज के लिए आती थीं और ज़मीन-दारों ने आकर फिर इज़हार किया कि किस तरह हमारा उन्होंने ख़्याल रखा और ये सब जो ग़ैर अहमदी थे ये भी आ के रो रहे थे कि हमारे सिर से बाप उठ गया।

फिर हमारा हस्पताल का अमला जो है उनकी अक्सरियत ने मुझे भी लिखा है कि हमारा हस्पताल यतीम हो गया और सबने बड़ी तकलीफ़ का इज़हार किया, अफ़सोस का इज़हार किया है। बहरहाल प्रत्येक से ताल्लुक़ निभाया। ग़रीबों का ख़्याल रखा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जनाज़ा जाते हुए फ़रमाया था कि फ़ौत शूदा की जो तारीफ़ करे तो फिर जन्नत वाजिब हो गई।

(सही अलबख़ारी, किताब अलजनायज़, बाब ثناء الناس على الميت, हदीस 1367) अल्लाह तआला उन्हें भी इसका मिस्दाक़ बनाए

डाक्टर मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब कहते हैं मेरे इलम के मुताबिक़ जमाअत में सबसे ज़्यादा सर्विस करने वाले डाक्टर का एज़ाज़ उनको हासिल है और वह मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ। और लिखते हैं कि जिस ज़माने में आपने काम शुरू किया इस ज़माने में कोई मददगार कम्पाऊंडर इत्यादि या हेल्पर इत्यादि नहीं होता था। ख़ुद ही कुंडी लगानी होती थी, खोलना होता था, मरीज़ को बुलाना होता था, अन्य काम भी ख़ुद करने होते थे। अकेले ही आप्रेशन थियेटर को मैनेज (manage) करना होता था। अनेस्तेज़िया (Anaesthesia) देने वाला कोई नहीं था वह काम भी ख़ुद ही करना पड़ता था और फिर आहिस्ता-आहिस्ता उन्होंने स्टाफ़ को ट्रेनिंग दी और इसके बाद हस्पताल का बड़ा नाम हो गया और कहते हैं कि इन्फ़ैक्शन की रेशो भी किसी भी प्राईवेट हस्पताल से कम थी। अक्सर मरीज़ जो थे वह सफ़ल ईलाज के बाद हस्पताल से विदा होते थे और बहरहाल उन्होंने मरीज़ों से उनका जो रवैय्या था वह देखा है और ग़ैर अहमदी मरीज़ भी मैं ज़ाती तौर पर भी जानता हूँ बहुत इज़्ज़त करने वाले थे।

डाक्टर मुनीर मुबश्शिर साहिब जो सरकारी हस्पताल में डाक्टर हैं। कहते हैं कि मैंने डाक्टर साहिब की तिब्बी ख़िदमात का एक वसीअ सिलसिला देखा है जो न केवल रब्वाह वालों पर बल्कि इर्द-गिर्द के समस्त इलाक़ों पर मुहीत था। कहते हैं मेरी सारी मुलाज़मत रब्वाह के मुज़ाफ़ात में रही है। यह सरकारी हस्पतालों में, रब्वाह के छोटे हस्पतालों में निर्धारित रहे हैं। कहते हैं तक़रीबन हर गांव और हर शहर के बहुत से लोग आपके मोतक़िदीन में से थे और जैसा कि मैंने कहा यही वजह है कि बेशुमार ग़ैर अज़ जमाअत लोगों उनकी वफ़ात पर अफ़सोस के लिए आए।

डाक्टर नूरी साहिब ने लिखा कि रब्वाह में अकेले रहने वाले एक बुज़ुर्ग मरीज़ ने डाक्टर मुबश्शिर साहिब की तस्वीर अपने कमरे में लटकाई हुई थी। डाक्टर नूरी साहिब उनको देखने गए तो बड़ी तारीफ़ और सम्मान के साथ इस मरीज़ ने बताया कि डाक्टर मुबश्शिर अक्सर मेरे घर आते और मेरी ख़ैरियत और सेहत के बारे में दरयाफ़्त करते थे। अल्लाह उनको सलामत रखे। इस वक़्त उनकी ज़िंदगी की बात है। उनकी ख़सुसिआत ख़िदमात और मरीज़ों के जज़बात के इतने ख़ुतूत हैं कि मेरे लिए वह वर्णन करना तो संभव नहीं। ख़िलाफ़त से भी ग़ैरमामूली वफ़ा का ताल्लुक़ था जैसा कि पहले भी मैंने कहा। अल्लाह तआला उनसे बे-इंतिहा मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और अपने प्यारों के क़ुरब में जगह अता फ़रमाए।

तीसरा जनाज़ा जो है, यह दूसरा ग़ायब जनाज़ा है श्रीमती सय्यदा अंतुल बासित साहिबा जो सय्यद महमूद अहमद साहब इस्लाम आबाद की पत्नी थीं। पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहिब की पोती थीं और मुहतरम सय्यद अबदुर्रज़्ज़ाक़ शाह साहिब की बेटी थीं। हज़रत उम्मे ताहिर रज़ियल्लाहु अन्हो की भतीजी थीं। मरहूमा के वालिद अबदुर्रज़्ज़ाक़ शाह साहिब ने पहली आइरिश अहमदी महिला हनीफा शाह साहिबा जिनका पहला नाम कैथरीन ओबराइन (Catherine O Brien) था उनसे शादी की थी और यह शादी 1945 ई. में नैरुबी कीनीया में हुई थी। फिर उनकी यह वालिदा पाकिस्तान भी आगईं और पाकिस्तान में शाह साहिब सिंध में निर्धारित रहे और वहां इस छोटे से गांव में उन्होंने बावजूदि कि आयरलैंड की थीं बड़ी क़ुर्बानी से गुज़ारा किया और उनके बच्चे भी इंतेहाई क़ुर्बानियां करने वाले थे जिनमें से एक यह अमतुल बासित हैं।

उनके ख़ावंद सय्यद महमूद शाह साहिब कहते हैं कि नमाज़ों की पाबंद और विशेषता तहज्जुद बहुत बाक़ायदगी से पढ़ती थीं और बचपन से ही नमाज़ तहज्जुद अपने वालिद साहिब के साथ पढ़ती रहीं। आप दीनी शायर की पाबंद और दीनदार महिला थीं। हमेशा ग़रीबों और नादारों की इमदाद करती थीं। पर्दे की बहुत सख़्ती से पाबंदी करती थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में शौहर के इलावा एक बेटी और दो बेटे छोड़े हैं। उनके एक बेटे सय्यद बशीर अहमद तो यहीं रहते हैं और एक बेटे सय्यद शाहिद अहमद हैं। बेटी उनकी अमरीका में हैं। उनकी बेटी मजीदा मुल्क जो डाक्टर आमिर मलिक साहिब अमरीका की पत्नी हैं कहती हैं कि वालिदा हरदिल अज़ीज़ और सदाबहार शख़्सियत की मालिक थीं। जो भी उनसे मिलता उनका गरवीदा हो जाता। ख़िलाफ़त से दिल्ली मुहब्बत रखने वाली थीं। बहुत नफ़ीस तबा, सलीक़ा शआर और अच्छे अख़लाक़ की मालिक थीं। अपनी तकलीफ़ का कभी खुल कर इज़हार नहीं करती थीं। ग़रीबपरवरी और सदक़ा ख़ैरात में भी आगे आगे थीं। बच्चियों की शादीयों के लिए मदद, गोरबा के घरों में राशन देना, यतीमों की पढ़ाई का ख़र्चा, ग़रीबों को खाना खिलाना ग़रज़-कि अपना वक़्त अल्लाह तआला के बंदों की मदद में गुज़ारा करतीं चाहे वह दुआ की शक्ल में हो या सदक़ा की शक्ल में। ज़्यादा-तर ख़ुदा की बातें और इलाही नुसरत की बातें करना पसंद करतीं और दोस्ती भी ऐसे लोगों से होती जो ख़ुदा से मुहब्बत करने वाले थे। अल्लाह तआला का भी उनसे एक ख़ास सुलूक था। उनकी दुआओं को अल्लाह तआला क़बूल भी फ़रमाता था और अल्लाह तआला बहुत सी बातों में बहुत सी दुआओं की क़बूलियत की पहले ही उनको सूचना भी दे देता था। सख़्त बीमारी में भी नमाज़ नहीं छोड़ी और हर वक़त नज़र घड़ी पर रहती कि कहीं नमाज़ न छूट जाए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ आता फ़रमाए।

और यह तीसरा जनाज़ा ग़ायब जो है वह श्रीमान शरीफ़ अहमद बंदेशा साहिब का है जो पाकिस्तान के चक नंबर 261 उद्धव वाली फैसलाबाद के सदर जमाअत थे। उनकी भी पिछले दिनों में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बेटे रहमतुल्लाह बंदेशा साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं वह वर्णन करते हैं कि हमारे दादा-जान अभी दो तीन माह के थे कि आपके माता पिता और दीगर समस्त क़रीबी अज़ीज़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में अय्याम-ए-ताऊन में वफ़ात पा गए तो उस वक़्त दादा-जान की एक दौर की रिश्तेदार अहमदी फ़ैमिली ने उनकी इबतेदाई अय्याम में परवरिश की। बाद में तहसील बटाला के एक क़ाज़ी के फ़ैसला के मुताबिक़ एक और निसबतन ज़्यादा क़रीबी अहमदी फ़ैमिली में परवरिश पाई और इस तरह आप आग़ाज़ से ही अहमदी माहौल में परवरिश पाते हुए जमाअत अहमदिया में शामिल रहे। मरहूम कम-ओ-बेश पच्चीस साल तक गांव में सदर जमाअत रहे। बेशुमार ख़ूबियों के मालिक एक दरवेश सिफ़त इन्सान थे। इबादात में ऊंचे दर्जा का मयार रखने वाले, बेकसों और ख़ुसूसियत से अज़ीज़-ओ-अक़ारिब की मदद करने वाले, निज़ाम-ए-जमाअत और ख़िलाफ़त से बेहद मुहब्बत करने वाले इन्सान थे। पीछे रहने वालों में पाँच बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। आपके एक बेटे जैसा कि मैंने बताया रहमतुल्लाह बंदेश साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला हैं जो आजकल जामिआ अहमदिया जर्मनी में बतौर उस्ताद ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और अपने गांव के मुख़ालेफ़ाना हालात की वजह से अपने वालिद के जनाज़े और तदफ़ीन में बरवक़्त शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए और समस्त बच्चों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोई के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-10)

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार निम्नलिखित 13 सरकरदा लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इजतेमाई तौर पर मुलाक़ात की
इस मुलाक़ात में कांग्रेस Mike McCaul भी शामिल थे
Mr. Carl Clemencich
(सिटी कौंसल मीनAllenडैलस)
Dr.Robert Hunt
डायरेक्टर आफ़ टैक्नोलोजी एजूकेशन
Southern Methodist University
Mr.Paul Voekler मेयर रिचर्डसन टेक्सास
(वह बैतुल इकराम के संग-ए-बुनियाद की तक़रीब में भी शामिल हुए थे)
Mr. Sandeep Srivastava
(वह कांग्रेस के candidate हैं)
Mr.Kurt Werthmuller
(वह यूनाइटेड स्टेटस कमीशन आन इंटरनैशनल रिलीजीस फ़्रीडम सरप्रवाइज़री पालीसी analyst हैं)
Mr.Brian Harvey
(चीफ़ आफ़ पुलिस Allen टेक्सास)
Mr.Salman Bhojani
पाकिस्तानी अमरीकन Corporate Lawyer
(वह सिटी कौंसल Euless के साबिक़ मैंबर भी रहे हैं)
Mr.Craig Hill
(Dean of Perkins School of Theology Methodist University)
Mr.Azfar Moin
Dean Department of Religious Studies (योर-नैवर सिटी आफ़ टेक्सास)
Dr.Basheer Ahmad
मुस्लिम सायका ट्रस्ट
Nicole Collier स्टेट कांग्रेस वूमन
Mary Mcdermott
(Prominent Figure in Dallas)

मस्जिद बैतुल इकराम के साथ जो जुड़ा बड़ा चौड़ा ज़मीन टुकड़ा है, यह महिला उसकी मालिक हैं, उन्होंने अपनी यह ज़मीन जमाअत को इन दिनों पार्किंग के लिए दी हुई है।

इस इजतेमाई मुलाक़ात के दौरान महिला McDermott ने कहा मैंने आपकी कम्यूनिटी को अपनी साथ वाली ज़मीन पार्किंग के लिए दी हुई है। कम्यूनिटी के लिए लोग ज़मीन के एक छोटे से टुकड़े के लिए मेरे बहुत शुक्रगुज़ार हैं और मुझ पर मेहरबान हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इस इलाक़े में आपकी कितनी ज़मीन है। इस पर उन्हों ने बताया कि अब 400 एकड़ है और मैं इस की देखभाल करती हूँ। यह ज़मीन मुझे माता से मिली है। माता की वसीयत थी कि 120 एकड़ शहर की इंतेज़ामिया को पार्क इत्यादि बनाने के लिए दे दूं। इसलिए अब बाक़ी 400 एकड़ मेरे पास है। इसी पर अब जमाअत के लोग अपनी गाड़ियां पार्क कर रहे हैं

एक मेहमान ने सवाल किया कि मेरा ताल्लुक़ पाकिस्तान से है। पाकिस्तान में अहमदियों के ख़िलाफ़ मज़ालिम हो रहे हैं तो आप अहमदियों को साबित-क़दम रखने के लिए उन्हें क्या हिदायत, पैग़ाम देते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर आप पुख़्ता, मज़बूत ईमान रखते हैं तो साबित-क़दम रहेंगे। अगर आप इबतेदाई इस्लामी तारीख़ का मुताला करें तो देखेंगे कि मक्का में इबतेदाई मुस्लमानों को बड़ी बेदर्दी से क़तल किया जाता था लेकिन वे इन मज़ालिम पर साबित-क़दम रहे। अतः आज भी इस ज़ुल्मो-सितम के बावजूद अगर आपको विश्वास है कि आप सही तरीक़ पर हैं और आप हक़ पर हैं तो फिर आप साबित-क़दम रहेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया चंद लोग होते हैं, एक फ़ीसद से भी कम जो यह मज़ालिम बर्दाश्त नहीं कर सकते और पीछे हट जाते हैं। हमारे अहमदियों को शहीद किया गया, जेलों में डाला गया, मारा पीटा गया, उनकी रोज़ाना की ज़िंदगी को उनके लिए मुश्किल बना दिया गया है लेकिन वे सब कुछ बर्दाश्त कर रहे हैं और Survive कर रहे हैं।

एक मेहमान Sandeep Srivastava साहिब ने अर्ज़ किया कि वह लखनऊ इंडिया से हैं और यहां टेक्सास डिस्ट्रिक्ट 3 से कांग्रेस के candidate हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप उम्मीद रखते हैं कि जीत जाऐंगे। इस पर उन्हों ने कहा कि हुज़ूर की दुआएं मिल जाएँगी तो जीत जाऐंगे।

चीफ़ आफ़ पुलिस Brian Harvey का हुज़ूर अनवर ने शुक्रिया अदा किया और फ़रमाया कि आपकी कमांड में पुलिस बहुत तआवुन कर रही है।

एक मेहमान ज़फ़र मुईन साहिब जो टेक्सास यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं कहने लगे कि मैं सूफ़ी इज़्म के बारे में भी पढ़ाता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : तो आप अहमदिया लिटरेचर भी पढ़ें। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब पढ़ें। इस बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ है।

एक मेहमान डाक्टर बशीर अहमद साहिब ने अर्ज़ किया कि मैंने Intra-Faith आर्गेनाईज़ेशन बनाई है जिसमें अहमदी, सुन्नी, शीया और दूसरे फ़िर्क़ों के भी नुमाइंदे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया असल यह है कि विभिन्न मज़ाहिब, कम्यूनिटीज़ आपस में एक दूसरे का एहतेराम करें, आपस में बातचीत करें, अमन से रहें और आपस में हम-आहंगी पैदा करें। डाक्टर बशीर अहमद साहिब अपनी तसनीफ़ करदा दो कुतुब साथ लाए थे। एक किताब उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला को पेश की और दूसरी किताब अपने पास रखने के लिए हुज़ूर अनवर से हस्ताक्षर करवाए।

यह इजतेमाई मुलाक़ात 6 बजकर 10 मिनट तक जारी रही। इसके बाद समस्त मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाई। इसके बाद 6 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मारकी में तशरीफ़ ले आए। हुज़ूर अनवर की आमद से क़बल समस्त मेहमान अपनी अपनी नशिस्तों पर बैठ चुके थे। आज इस तक़रीब में विभिन्न जमाअतों और देशों से आने वाले जमाअती ओहदेदारान और नुमाइंदों के इलावा 140 ग़ैरमुस्लिम और ग़ैराज़ जमाअत मेहमानों ने शिरकत की।

इन मेहमानों में वे समस्त मेहमान भी शामिल थे जिन्हों ने इस तक़रीब से क़बल हुज़ूर अनवर के साथ इन्फ़रादी तौर पर और ग्रुप की सूरत में मुलाक़ात की थी। इसके अतिरिक्त इस तक़रीब में डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचरज़, वोकला, इंजेनीयर्ज़, सैक्योरिटी के इदारों के नुमाइंदे और ज़िंदगी के विभिन्न शोबों से ताल्लुक़ रखने वाले मेहमान शामिल थे।

प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो सय्यद लूबेब जुनूद साहिब ने की। इसके बाद उसका अंग्रेज़ी अनुवाद माननीय इब्राहीम नईम साहिब ने किया।

इसके बाद माननीय अमजद महमूद ख़ानसाहब (नैशनल सैक्रेटरी अमूरे खारज, युवा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 13 July 2023 Issue No. 28

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ने अपना तआरुफ़ी ऐडरैस पेश किया। उसके बाद Allen शहर की सिटी कौंसल के मैंबर ऑनरेबल Carl Clemencich ने ऐडरैस पेश करते हुए कहा : आज मस्जिद बैतुल इकराम के उद्घाटन की तारीख़ी तक़रीब में शामिल होना बड़े एज़ाज़ की बात है। यह मस्जिद Allen शहर के Hedgcoxe Road पर वाक़्य है। मैं मेयर और Allen शहर की समस्त सिटी कौंसल की तरफ़ से जमाअत अहमदिया को इस ज़बरदस्त कामयाबी पर मुबारकबाद देता हूँ। जमाअत अहमदिया के मैंबरान और बाक़ी दूसरे अहबाब जो आज के प्रोग्राम में शामिल हैं। सब ही बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं। जमाअत अहमदिया के सरबराह ख़ुद इस तक़रीब में शामिल होने के लिए अमरीका तशरीफ़ लाए हैं। Allen शहर के लिए ईआह एक विशेष लम्हा है कि बढ़ती आबादी के साथ साथ इस शहर की कसीर संख्या में भी बढोती हुई है और जमाअत अहमदिया का भी इस में विशेष किरदार रहा है। यहां तक़रीबन दो दहाईयों से जमाअत अहमदिया मौजूद है और हमारी कम्यूनिटी का एक बुनियादी हिस्सा बन चुकी है। हम जमाअत अहमदिया की ख़िदमात को सराहते हैं, जैसे गरीबों के लिए खाना तक़सीम करना, ज़रूरतमंदों के लिए कपड़े जमा करना और बहुत से दीगर अवसरों पर इस इलाक़े के ज़रूरतमंद रिहाइशियों की सहायता करना शामिल है। इन समस्त ख़िदमात के पीछे हुज़ूर अनवर की क़ियादत है और इसलिए हम बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि आपके ख़लीफ़ा इस ख़ूबसूरत मस्जिद के उद्घाटन लिए Allen शहर में तशरीफ़ लाए।

हुज़ूर का अमन, इन्साफ़ और इन्सानियत की ख़िदमत का पैग़ाम जो आप समस्त दुनिया को देते हैं इस की इस शहर में भी ज़रूरत है। यह Allen शहर की ख़ुशक़िसमती है कि एक अम्न पसंद और इन्सानियत की ख़िदमत का जज़बा रखने वाली कम्यूनिटी ने इस शहर को अपनाया और इस शहर में यह ख़ूबसूरत मस्जिद बनाई। मेरी ख़ाहिश है कि मेरी यह मस्जिद न केवल इस शहर के लिए बल्कि इस समस्त इलाक़ा के लिए एक उम्मीद की किरण साबित हो। उम्मीद है कि यह मस्जिद इस शहर में और इस इलाक़ा में हमारे बाहमी ताल्लुक़ात मज़बूत करने और अमन क़ायम करने के लिए एक मुसबत किरदार अदा करेगी।

आख़िर में उन्होंने मेयर और Allen शहर की कौंसल की तरफ़ से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में इस शहर की चाबी पेश की।

इसके बाद प्रोफ़ैसर डाक्टर राबर्ट हंट (Dr Robet Hunt) जो कि Southern Methodist Universities, Perkins School of Theology में ग्लोबल थे थ योलोजीकल (Global Theological) विभाग के डायरेक्टर हैं, ने अपना ऐडरैस पेश किया। उन्होंने कहा मैं जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ आप ने Methodist University से मुझे और मेरे साथियों को आज के तारीख़ी प्रोग्राम में शमूलीयत की दावत दी। यह मेरे लिए बहुत गर्व की बात है कि मैं आज जमाअत अहमदिया के पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब की साथ हूँ। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब दो ख़ूबियों को फ़रोग़ देने के लिए वक़्फ़ हैं जिसमें पहली मज़हबी आज़ादी और दूसरी विशव्यापी स्तर पर मुकालमा-ओ-मुख़ातबा हैं। इन दोनों ख़ूबियों का आपस में गहरा ताल्लुक़ है क्योंकि मज़ाहिब के अंदर अगर बाहमी इफ़हाम-ओ-तफ़हीम न हो और बाहमी एहतेराम न हो तो तफ़र्रुक़ा की आवाज़ को तक़वियत मिलती है और मैं यह बात इस बुनियाद पर करता हूँ कि मेरी आधी बालिग़ ज़िंदगी ऐसे देशों में गुज़री है जहां मैं ख़ुद मज़हबी अक़ल्लीयत था।

यहां अमरीका में, जहां हमें आईन में मज़हबी आज़ादी दी गई है, हम पर लाज़िम है कि न केवल मज़हबी कमियो के लिए बल्कि प्रत्येक शख़्स के लिए यह आज़ादी बरक़रार रखें। अक्सर ये समझा जाता है कि मग़रिबी हुकूमतें जो कि मज़हब से मुंसलिक नहीं होतीं इसलिए मज़हबी आज़ादी को दबाती हैं। परंतु यह बात किसी सूरत में दरुस्त नहीं। मज़हबी आज़ादी के सबसे बड़े दुश्मन किसी मज़हब के गुमराह पैरोकार होते हैं। मज़हबी आज़ादी के सबसे बड़े दुश्मन वह जुनून पसंद पैरोकार होते हैं जो फ़िर्कावारियत को फ़रोग़ देते हैं। इस लिए चाहे हम फ़िर्कावाराना हालात में फंसे हुए हूँ या किसी विशेष वर्ग की सोच को बदलने की प्रयास में हों, यह ज़रूरी है कि प्रत्येक को मज़हबी आज़ादी मयस्सर हो। तारीख़ गवाह है कि जमाअत अहमदिया को ज़ुलम का निशाना बनाया गया और इसी वजह से ये जमाअत मज़हबी आज़ादी की काविशों में प्रथम सफ़ पर रही और यही चीज़ है कि जब तक हम एक दूसरे के साथ एहतेराम और खुली ज़हनीयत के साथ पेश न आएं, हम तफ़र्रुक़ा बाज़ी पर क़ाबू नहीं पा सकते और उन मनफ़ी वस्तुओं को मुआशरे से ख़त्म नहीं कर सकते। हमें एक दूसरे की मज़हबी आज़ादी और वक़ार का ख़्याल करना पड़ेगा अन्यथा प्रत्येक शख़्स इस मज़हबी आज़ादी को खोदेगा। मुझे उम्मीद है कि हुज़ूर का यहां तशरीफ़ लाना और इस मस्जिद का बनना हमारी हौसला-अफ़ज़ाई करेगा ताकि हम बाहमी बातचीत के ज़रीया एक अम्न पसंद और काबिल-ए-एहतिराम मुआशरे के हुसूल के लिए अपनी काविशों को और भी तेज़ कर दें।

उसके बाद Republican कांग्रेस मैन ऑनरेबल Michael McCaul ने अपना ऐडरैस पेश करते हुए कहा : आज मेरे लिए यहां आना बड़े गर्व की बात है। दुनिया के तीन मज़ाहिब यहूदियत, ईसाईयत और इस्लाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से अपनी तारीख़ हैं।

आज मैं हुज़ूर से दूसरी दफ़ा मिला हूँ और उनका यह विश्वास है कि हज़रत इब्राहीम से वाबस्ता ये तीनों मज़ाहिब अमन के साथ रह सकते हैं। इस बात का तजुर्बा जमाअत अहमदिया से अधिक किस को हो सकता है। यह वह जमाअत है जो पाकिस्तान में ज़ुलम का निशाना बनाई जा रही है और इसी वजह से हुज़ूर लंदन में मुक़ीम हैं। जैसा कि डाक्टर हंट ने बड़ी फ़साहत से वर्णन किया कि यह जमाअत अहमदिया ही है जिसने मज़हबी आज़ादी के हक़ में आवाज़ की।

उन्हों ने इस मस्जिद पर मुबारकबाद दी और कहा मुझे हुज़ूर अनवर के साथ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और जमाअत अहमदिया की तालीम, नए अह्दनामा और इंजील के बारे में बात करने का अवसर मिला। इस में कोई संदेह नहीं कि हमजमाअत अहमदिया से अमन, रहमदिली और मुहब्बत के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। मेरी परवरिश बतौर कैथोलिक हुई है मैं अब अमरीकी कांग्रेस में अहमदिया कॉक्स (Ahmadiyya Caucus) का चेयरमैन हूँ। इस कॉक्स में दोनों पार्टीयों और विभिन्न मज़ाहिब से ताल्लुक़ रखने वाले मैंबरान शामिल हैं। मैं आज शाम जमाअत अहमदिया के रुहानी सरबराह को (Texas Illinois और Maryland में ख़ुश-आमदीद कहता हूँ और विशेषता दुनिया में अमन फैलाने और क़ौमों में इत्तिहाद क़ायम करने, अदम-ए-तशद्दुद, इंतेहापसंदी के ख़ातमा, ग़ुर्बत के ख़ातमा, इक़तेसादी मुसावात, आलमी इन्सानी हुक़ूक़ के लिए और आलमी मज़हबी आज़ादी के लिए आपकी कोशिशों को सराहता हूँ।

शेष आगे ..

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad